Printer-Shreelal Jain.
Jain Sidhant Prakashak Press
9. Bishwakòsh Lane, Bagh Bazar,
CALCUTTA



publisher Nemichand Vakaliwal
220 Upper circular Road Calcutta.

प्रकाशकके दो शब्द ।

विदित हो कि जयपुर निवासी श्रीयुत पंडित इन्द्रलालजी शास्त्रीने हमको इस पूजाके बावत लिखा कि स्वर्गीय कविवर पं० थानसिंहजी अजमेरा टोंकनिवासी हालमें एक बडे अच्छे कवि हो गये हैं, उन्होंने बीस विहर मान तीर्थंकरोंकी पूजा सिद्धक्षेत्रपूजा वगेरह बहुत ही उत्तम कविता की है । आप यदि प्रकाशित करैं तो जैनीभाइयोंको बडा लाभ होगा । इसीप्रकार जयपुर निवासी श्रीयुत रामचंद्रजी खिंदूकाने भी हमको इसके प्रकाशित कर देनेका बहुत आग्रह किया और लिखा कि कविवरके सुपुत्रसे हमने छपानेकी आज्ञा ले ली है, दो प्रति हस्तलिखित भेजी तथा एकप्रति शुद्धकी हुई प्रेसकापी इंद्रलालजी शास्त्रीने संपादन करके भेजी । हमने इस पूजाविधानका आद्योपात पाठ किया तो हमको बहुत ही आनंद हुवा इसकी कविता अर्थगंभीरता पदलालित्य कविवर वृन्दावनजी व मनरंगलालजी आदिसे भी बढिया लगा और कथन भी अनेक प्रकारके छंद और राग रागनियोंमें भक्तिरसपूर्ण अनेक विषयोंकी शिक्षा देनेवाला पाया तब हमने सर्वसाधारणके हितार्थ इसको प्रकाशित किया है ।

इस पूजाविधानमें अनेक शब्द अप्रसिद्ध हैं जिनपर टिप्पणी करनेकी जरूरत थी परंतु दशलक्षणपर्वमें पहिले ही मुद्रित होकर सबके हाथमें पहुचा देनेकी आवश्यक्ता और शीघ्रता होनेसे टिप्पणी नहिं करसके यह त्रुटि दूसरी आवृत्तिमें दूर की जायगी ।

मिती भादवा वदि १ सोमवार
वीरनिर्वाण संवत् २४४१ ।

जैनीभाइयोंका हितैषी दास
नेमिचद बाकलीवाल ।

पूजावोंकी सूची ।

इति सूची ।

ॐ

श्रीवीतरागाय नमः ।

स्वर्गीय कविवर थानमलजी अजमेरा विराचित ।

विदेहक्षेत्रस्थ—

विंशतिविद्यमानतीर्थंकरपूजा ।

दोहा ।

सकल सुखाकर सकल पर, सकल[1] सकलजगनैन ।
सीमंधर आदिक सकलै[2], वीस ईश सुखदैन ॥ १ ॥
विहरत अवनि[3] विदेह जहँ, मुनिजन होत विदेहैं[4] ।
मैं स्वदेह पावन करन, नमूं नमूं धरि नेह ॥ २ ॥

१ शरीरसहित २ सब ३ पृथ्वी ४ शरीररहित ।

छंद चंडी। (१६ मात्रा)

जय जगीश वागीश नमामी, आदि ईश शिव ईश नमामी।
परम ज्योति परमेश नमामी, सेवत शतेक[1] सुरेश नमामी ॥ ३ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश नमामी, ज्ञानदिनेश गनेश नमामी।
वीतराग सर्वज्ञ नमामी, करुणावंत कृतज्ञ नमामी ॥ ४ ॥
सृष्टि इष्ट उत्कृष्ट नमामी, गुनगरिष्ठ[2] वच मिष्ट नमामी।
निराकार साकार नमामी, निर्विकार भवपार नमामी ॥ ५ ॥
निर आमय निकलंक नमामी, जय निरभय चिदअंक नमामी।
ज्ञानगम्य अतिरम्य[3] नमामी, स्वयं निकल निर्मोह नमामी ॥ ६ ॥
विघ्नहारि त्रिपुरारि नमामी, गुन अपार जितमार नमामी।
निर्विकल्प निर्द्वंद नमामी, जय नाशनभवकंद नमामी ॥ ७ ॥

१ सौ २ गुणोंमें अत्यन्त बड़े ३ बहुत मनोहर।

अक्षांतीत[१] यतीश नमामी, वीतशोक जितभीत नमामी ।
शाश्वत सुखित सुवेश नमामी, अघहन वृषचक्रेश[२] नमामी ॥ ८ ॥
अव्याबाध अछेद नमामी, जय निर्मल निर्वेद नमामी ।
स्वयंबुद्ध अविरुद्ध नमामी, सदा शुद्ध जितक्रोध नमामी ॥ ९ ॥
सुख अनंत भरपूर नमामी, जयो जगतदुखचूर नमामी ।
असम-शक्ति अव्यक्त नमामी, मुक्ति-रमनि-संसक्त नमामी । १० ।
रहित-आदि-मध्यांत नमामी, भव-दवाग्नि उपशांत नमामी ।
हरन-अविद्या-ध्वांत नमामी, अनेकांत एकांत नमामी ॥ ११ ॥
जितविस्मय निश्चिंत नमामी, सूक्ष्म अमन निःसंग नमामी ।
सदाप्रकाश विव्यक्त नमामी, धीश्वर केवलव्यक्त नमामी । १२ ।
श्रीधर श्रीविमलाभ नमामी, चतुरानन वरभाग नमामी ।

---

१ अतीन्द्रिय २ धर्मचक्रके स्वामी ।

क्रृष्ण-पुंडरीकाक्ष नमामी, विश्वंभर पुरुदेव नमामी ॥ १३ ॥
जगत-जीव हितहेत नमामी, कमलासन वृषकेत नमामी ।
ज्ञानईश ध्यानेश नमामी,जोगईश भोगेश नमामी ॥ १४ ॥
धाम तीन जगशीस नमामी, अचलप्रानचतुईश नमामी ।
जय अनंत भगवंत नमामी, सुख अनुपम विलसंत नमामी ॥१५॥
जगदाधार अपार नमामी, तत्त्व-भेद-विस्तार नमामी ।
अशरन शरन सुसंत नमामी, जगमहंत अरहंत नमामी ॥ १६॥
अनुपमरूप अरूप नमामी, तत्त्वभूप चिद्रूप नमामी ।
इम शुचिनाम अनंत तिहारे, तन मन पावन होत उचारे ॥ १७॥

इति अष्टोत्तरशत १०८ नामानि पठित्वा जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ समुच्चय विंशतिजिनपूजा।

दोहा।

दायक यश जय सुमति सुग, सुख दुतिरूप अपार।
घायक विधि घायकनिके, लायक जग उद्धार॥ १॥
सीमंधर आदिक सकल, वियद बाहु मित अैन।
आह्वानन त्रिविधा करूं, इत तिष्ठहु सुख दैन॥ २॥

ओं ह्रीं श्री सीमंधरादिअजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमानविंशतिजिनेंद्राः! अत्र अवतरत अवतरत। संवौषट्।

ओं ह्रीं श्री सीमंधराद्यजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्त्तमानविंशतिजिनेंद्राः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत। ठः ठः।

ओं ह्रीं श्री सीमंधराद्यजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमानविंशतिजिनेंद्राः! अत्र मम सन्निहिताः भवत भवत। वषट्।

अथ अष्टक ।

गन्दिरा छन्द ।

शीतल सलिल अमल तृटहारक, लेय सुधासम भृंगभरं ।
जिनपति चरन अग्र त्रय धारा, धरूं तापत्रय नाशकरं ॥
जय कमलासन सुंदरशासन, भासन नभद्रय बोधवरं ।
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्त्तमानविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मलय पटीर घसित वरकुंकुम, शीतलगंध सुरंग भर्‍यो ।
सारसवरन चरन तव धारत, आकुल दाह अपार हर्‍यो ॥
जय कमलासन सुंदरशासन, भासन नभद्रय बोधवरं ।
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीसजिन श्रेयकरं ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो चंदनं नि० स्वाहा ॥ २ ॥

जीरक श्याम सुगंधित तंदुल, श्वेतवरन वर अनियारे ।
लहि अक्षत अक्षयपद पावन, धरूं पुंज हग मन हारे ॥

जय कमलासन सुंदरशासन, भासन नभद्वय बोधवरं।
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्त्तमानविंशतिजिनेंद्रेभ्यो अक्षतान् नि० स्वाहा ॥३॥

केतकि कंज गुलाब जुही वर, सुमन सुवासित मनहारी।
धारत चरन लहैं समतासर, नशैं मदनसर दुखकारी ॥
जय कमलासन सुंदरशासन भासन नभद्वय बोधवरं।
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीसजिन श्रेयकरं ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेंद्रेभ्यो पुष्पम् नि० स्वाहा ॥ ४ ॥

विंजन विविध छहों रस पूरित, सद्य सुसुंदर बलकारी।
श्रीपति चरन चढाऊं चरु वर, निजबल दायक क्षुतहारी ॥
जय कमलासन सुंदरशासन, भासन नभद्वय बोधवरं।
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेंद्रेभ्यो नैवेद्यं नि० स्वाहा ॥ ५ ॥

प्रजलित ज्योति कपूर मनोहर, अथवा पूरित स्नेह वरं ।
करत आरती हरि भव आराति, निजगुन जोति प्रकाशकरं ॥
जय कमलासन सुंदरशासन, भासन नभद्धय बोधवरं ।
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थविंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीपं नि० स्वाहा ॥ ६ ॥

चूरित अगर पटीरादिक वर, गंध हुताशन संग धरूं ।
खेऊं धूप जगेशचरन ढिग, चाहत हूं विधि नाश करूं ॥
जय कमलासन सुंदरशासन, भासन नभद्धय बोधवरं ।
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेंद्रेभ्यो धूपं नि० स्वाहा ॥ ७ ॥

फल दाडिम एला पिकवल्लभ[1], खारिक आदिक मिष्ट भले ।
लेकर चरन चढावत जिनके, पावत हैं फल मोक्ष रले ॥

१ कविवल्लभ पाठ भी है । पिकवल्लभ–आम और कविवल्लभ–केला होता है ।

जय कमलासन सुंदरशासन, भासन नभद्वय बोधवरं ॥
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीसजिन श्रेयकरं ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेंद्रेभ्यो फलं नि० स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत मनसिजशर, चरु दीपक वर धूप फलं।
भवगदनाशन श्रीपतिके पद, वारत हूं करि अर्घभलं ॥
जय कमलासन सुंदरशासन, भासन नभद्वय बोधवरं।
श्रीधर श्री सीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्री सीमंधरादिकविदेहक्षेत्रस्थवर्तमानविंशतिजिनेंद्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जयमाला।

दोहा।

द्वीप अर्द्ध द्वय मेरु पन, मेरु मेरु प्रति च्यार।
विहरत विभव अनंतयुत, अवनि विदेह मझार ॥ १ ॥

चंडी छंद। (मात्रा १६)

सीमंधर सुखसीम सुहाये, युगमंधर युग वृष प्रकटाये।
बाहु बाहुबल मोह विदारयो, जिन सुबाहु मनमथमद मारयो ॥ २ ॥
संजातक निज जाति पिछानी, स्वयंप्रभू प्रभुता निज ठानी।
ऋषभानन ऋषिधर्म प्रकाशन, वीर्य अनंत कर्मरिपु नाशन ॥ ३ ॥
सूरप्रभू निजभा परिपूरन, प्रभु विशाल त्रिकशल्य विचूरन।
देव वज्रधर भ्रमगिरि भंजन, चंद्रानन जगजन मनरंजन ॥ ४ ॥
चंद्रबाहु भवताप निवारी, ईश भुजंगम–धुनि–मनि धारी।
ईश्वर शिवगवरी दुख भंजन, नेमिप्रभू वृषनेमि निरंजन ॥ ५ ॥
वीरसेन विधि-अरि-जय वीरं, महाभद्र नाशक भव-पीरं।
देव देव-यशको यश गावै, अजितवीर्य शिवरमनि सुहावै ॥ ६ ॥
ये अनादि विधि बंधनमाहीं, लब्धियोग निज निधि लखि पाई।
सम्यक बलकरि अरि चकचूरन, क्रमतें भये परम दुति पूरन ॥ ७ ॥

अंतरीक आसन पर सोहै, परम विभूति प्रकाशित जो है ।
चौसठि चमर छत्रत्रय राजै, कोटि दिवाकर दुति लखि लाजै ॥ ८ ॥
जय दुंदुभि धुनि होत सुहानी, दिव्यध्वनि जग-जन दुखहानी ।
तरु अशोक जनशोक नशावै, भामंडल भव सात दिखावै ॥ ९ ॥
हर्षित सुमन सुमन वरसावै, सुमन-अंगना सुगुन सु गावै ।
नव-रस-पूरन चतुरँग भीनी, लेत भक्तिवश तान नवीनी ॥ १० ॥
बजत तार तननननन ननन, घुंघरू धमक झुननन झुननन ।
धी धी धृकट धृकट द्रम द्रम द्रम, ध्वनत मुरज पुरु ताल तरलसम ॥११॥
ता थेई थेई थेई चरन चलावै, कटिकर मोरि भाव दरसावै ।
मानथंभ मानीमद खंडन, जिन-प्रतिमा-युत पापविहंडन ॥ १२ ॥
शालचतुक गोपुर-युत सोहै, सजल खातिका जनमन मोहै ।
द्विजगन[1] कोक[2] मयूर मरालं, शुक-कलरव-रव होत रसालं ॥ १३ ॥

१ पक्षी । २ चक्रवाक—चकवा ।

पूरित सुमन सुमनकी बारी, बन-बंगला गिरवर छविधारी ।
तूप ध्वजा गन पंक्ति विराजै, तोरन नवनिधि द्वार सु छाजै ॥ १४ ॥
इत्यादिक रचना बहुतेरी, द्वादश सभा लसत चहुं फेरी ।
गनधर कहत पार नहिं पावै, "थान" निहारतही बनि आवै ॥१५॥
श्रीप्रभुके इच्छा न लगारं, भविजन भाग्य उदय सु विहारं ।
ये रचना मैं प्रकट लखाऊं, या हित हरषि हरषि गुन गाऊं ॥ १६ ॥

छंद घत्ता ।

यह जिन गुनसारं करत उचारं, हरत विकारं अघभारं ।
जय यश दातारं बुधि-विस्तारं, करत अपारं सुखसारं ॥ १७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ वर्तमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल छंद ।

जो भविजन जिन विंश यजैं शुभ भावसूं ।
करैं सुगुनगनगान भक्ति धरि चावसूं ॥

लहै सकल संपति अर वरमति विस्तरै ।
सुर नर पद वर पाय मुक्ति रमनी वरै ॥ १ ॥

इति आशीर्वादः ।

इति समुच्चयविंशतिविद्यमानजिनपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

——:०:——

अथ विदेहक्षेत्रस्थितजिनप्रत्येकपूजा तत्रादौ—

श्रीसीमंधरजिनपूजा ।

दोहा ।

करि निजध्यान प्रचंडबल, जये कर्म अरि चंड ।
चिदगुन ज्योति अखंडमें, गिले गगन द्रय खंड ॥ १ ॥
सो सीमंधर देव वर, दीनबंधु स्वगमेव ।
करि करुणा मुझ दीनपै, तिष्ठ तिष्ठ इत देव ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्त्तमानसीमंधरपरमदेव ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्त्तमानसीमंधरपरमदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्त्तमानसीमंधरपरमदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट् ।

अथ अष्टक ।

लीलावती छंद ।

पय कमलसुवासित तृष्णानाशित, हिमगिरि समासित तापहरा ।
भरकरि वर झारी भ्रमतप-हारी, धारतहूं त्रय धार धरा ॥
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं ।
अघगनकरचूरन हे सुख पूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

कसमीर सुरंगी घसि हरिसंगी, परिमलअंगी तापहरी ।
प्रभुचरन चढावत सुख सरसावत, जावंत भव आताप टरी ॥

१ समस्त ।

जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं।
अघगन कर चूरन हे सुखपूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं ॥ २ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल शुभ सुंदर श्वेत सुमनहर, पावन दधिसुतदुतिहारी।
हे जिन करुणान्वित अक्षयपदहित, यजूं चरन तव भरिथारी ॥
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं।
अघगन कर चूरन हे सुखपूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानसीमंधरजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुमन सु मनहर विविधवरनपर, कुंद गुलाब जु आदि वरं।
लहिकर जिनपदवर पूजत सुखभर, संवरआरिसर नाश करं ॥
जय जय सीमंधर यजतपुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं।
अघगन कर चूरन हे सुखपूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

मोदक बलकारन क्षुधानिवारन, दृगमनहारन मिष्ट बने ।
निजगुणबलधारन ले सुखसारन, पूजूं जिनपद इष्ट घने ॥
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं ।
अघगन करि चूरन हे सुखपूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥
तमपटल विनाशन ज्योतिप्रकाशन, दीपक दिव्य उजास करूं ।
भ्रमतिमिरविनाशन प्रभु जगपावन, पांवन ऊपरि वार धरूं ॥
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं ।
अघगन करि चूरन हे सुखपूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥
लहि चंदन वावन चूरन पावन, अगरादिक करि संग भले ।
खेऊं जिनपदतर ये निजमनधारि, निजगुनहर वसुकर्म जले ॥
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं ।

अघगन करि चूरन हे सुखपूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल प्रासुक सुंदर मिष्ट मनोहर, खारिक लौंग विदाम भले ।
जिन चरन चढाऊं हर्ष बढाऊं, चाखनकूं फल सुगुन रले ॥
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं ।
अघगन करि चूरन हे सुखपूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल हरि अक्षत अरु सुभग सुमन चरु, दीप धूप फल पुंज सजूं ।
मन आनंद अति धरि अर्घ सु लेकरि, श्रीपतिजूके चरन जजूं ॥
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं ।
अघगन करि चूरन हे सुखपूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

शिव शिवमय शिवकर शिवंद[1], शिवंदायक[2] शिवईश ।
शिव सेवत शिवमिलन हित, सीमंधर जगदीश ॥ १ ॥

छंद चंडी वा रूपचौपाई ।

जय जगपति वरगुन वरदायक, केवलसदन मदन मदघायक ।
पर्म धर्म धर भ्रमपुर वाशन, शासनसिद्ध अचल अचलासन ॥ २ ॥
चखट अघट रस घट घट व्यापक, अनहत आहत सुगुनप्रकाशक ।
धरत ध्यान दुरगति दुख वारन, जग जलतैं जगजंतु उधारन ॥ ३ ॥
अशरनशरन मरन-भय-भंजन, पंकजवरनचरन मनरंजन ।
निजसम करत जु मनतुव धारत, ज्यौं पावकसँग इंधन जारत ॥ ४ ॥
नृप श्रीहंसतनुज वर आनन, लच्छन वृषभ लसत अघभानन ।

१ कल्याणदायक । २ मुक्तिदायक ।

पुंडरपुर पुर है मन भावन, सो तुम जनमयोग भयो पावन ॥ ५ ॥
लियो जनम जगजन दुखनाशन, शिर अमरेश धरत तुव शासन ।
होत विरक्त देव ऋषि आवन, भयो परम वैराग्य दिढावन ॥ ६ ॥
शिवका दिव्य कहार पुरंदर, हो सवार जिन धर्म धुरंधर ।
संग सकल तजि व्रत धरि पावन, लगे ध्यान मारग शिव जावन ॥ ७॥
करि वटमार घातियाचूरन, शक्ति अनंत सजी परिपूरन ।
पूरव जनम भाव वर भावत, ता फल ये अतिशय दरसावत ॥ ८ ॥
बिन इच्छा विहार सुखकारन, भव्यनकूं भवपार उतारन ।
यदपि देव तुम दृष्टि अगोचर, तदपि प्रतीति धरत हम निजउर ॥९॥
जानत हूं तुम हो जगजानन, मैं किम दुःख कहूं चतुरानन ।
दीन बंधु दुख दीन मिटावन, चहिये अपनो विरद निवाहन ॥ १० ॥

छन्द हरिगीता ।

वर वरन भवतपहरन आनन्द भरन दृगमन भावने ।
युत सुरसपूराति गंध शुभ भविवृन्द अलि ललचावने ॥
सर्वज्ञ आगम विटपके शुचि सुमन वरन रसाल ये ।
धरि सुमति गुन सह 'थान' उर जगभालकी जयमाल ये ॥ ११ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्री सीमंधरजिनेंद्राय महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल छन्द ।

सीमंधर जिन पूजि करै जो थुति भली
दहै सकल अघवृन्द लहै मनकी रली ॥
निर आकुल ह्वै हरै मोह महद्वंदकूं
टारै भ्रम आताप लखै चितचंदकूं ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीसीमंधरजिनपूजा ॥ २ ॥

अथ श्रीयुग्मंधरजिनपूजा।

स्थापना—दोहा।

लसै परमदुतिवंत छवि, लखि लाजै रवि मैन।
विगतमोह, मोहित करत, सुर नर मुनिमन नैन॥ १॥
मैं जु दीन तुम दीनपति, यह वानिक स्वयमेव।
तिष्ठ तिष्ठ मम हित अबै, भो युगमंधर देव॥ २॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीयुग्मंधरजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीयुगंधरजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानयुग्मंधरजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

अथ अष्टक।

शुभोदर छंद।

शैल सुरोदन निर्गत नीरसमं शुभ पावन।
हीरसमं सितशीतल ले तृट ताप नशावन॥

मोह महामल मोचनकूं त्रयधार धरूं धर ।
भो युग्मंधर देव धरो शिवथान कृपा कर ॥ १ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुग्मंधरजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वहा ।

ले वर रंगभरी शुचि केसर चन्दन बावन ।
मेलि घसूं जल संग मिला कदलीसुत पावन ॥
पूजत हूं पदकंज तुही अघताप सबैं हर ।
भो युग्मंधर देव धरो शिवथान कृपाकर ॥ २ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुग्मंधरजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

श्वेत सुधाकरकी करसे वरगंध अनीयुत ।
ओघ अखंडित अक्षतके शुचि है जल क्षालित ॥
ले वसुमी क्षिति पावनकूं पद पुंज करूं वर ।
भो युग्मंधर देव धरो शिवथान कृपा कर ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुग्मंधरजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

गंध भली मंडरात अलीगन है जिनपै जुरि ।
सो समरायुध म्हेकत है शुचि रंग महा भरि ॥
या हित तोहि चढोढतहूं न परै फिर वा कर ।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

भोगन योग महीपनके रसपूरित हैं षट ।
चंद्रकला वर घेवर आदि बनाय धरें झट ॥
सो तुव पाय चढावतहूं करिके क्षुतको उर ।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

सुंदर दीपक जोति लसै तमवृन्द निवारन ।
वारत हूं तुमपै करधारि कुज्ञान विदारन ॥
आतमज्ञान अनूप प्रकाश करो हमरे उर ।

भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

चूरन ले अगरादिक चारु सुगंध महायुत ।
जारनकूं विधिबंध करें हम पावक संयुत ॥
जानि सुखाकर तोहि कह्यो शरनों अब आकर ।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

दाड़िम श्रीफल अंब रसान्वित निंबुक पावन ।
खारिक चोचक मिष्ट सुगंधभरा मनभावन ॥
मोक्ष महाफल लैन धरे तुमरे पद ल्याकर ।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपा कर ॥ ८ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

नीर सुचंदन चारु लिए वर अक्षत पावन ।

पुष्प सुव्यंजन दीप धरूं वर धूप हुताशन ॥
ले फल पुंज अनूप करूं शुचि अर्घ सुखाभर ।
भो युगमंधर देव धरो शिवथान कृपाकर ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

करै विविध लीला ललित, सुगुनगेह निज भोग ।
शिवश्यामा संगम भए, गये विरूप वियोग ॥ १ ॥

सुंदरी छंद ।

मैं अनादि रच्यो पररूपमैं, नहि लख्यो निज आतम भूप मैं ।
सुन दयाल सहे दुख मैं महा, सब प्रतच्छ दुरै तुमतैं कहा ॥ २ ॥
अब कछू वरलब्धि बसायकै, श्रवनद्वार गिरा तुव आयकै ।
उरप्रवेश कियो सुखदायिनी, सकलविभ्रम मोह विथा हनी ॥ ३ ॥

सहित सो अविधेय विधानतैं, मिलत है संबंध कथानतैं ।
निज प्रयोजन इष्ट सु तासमैं, लसत साधन शक्य सुजासमैं ॥ ४ ॥
सर्व ज्ञायक भाषित पावनी, है अनादि कृपा सरसावनी ।
विगतलोकविरुद्धनतैं भली, निजप्रतीति स्वयं अनुभौ रली ॥ ५ ॥
अलख है जिन ! तू मम नैनतैं, लखि तथापि लियो तुव वैनतैं ।
सुनि सुतत्त्व गिनी सरवज्ञता, विगतदूषणतैं सुविरागता ॥ ६ ॥
सुखदवैन प्रतच्छ प्रकाश है, त्रिविध लच्छन आप्त सुवास है ।
दम दया तप ये सुखदाय है, सब मती इम कहत सुनाय है ॥ ७ ॥
जित नहीं यह मूर सुखी नहीं, घर तजो परिपूर सुखी वही ।
अतुल लच्छि लहै किम तो विना, नरकदायक लच्छि लहै घना ॥८॥
द्युति विभूति विज्ञान विशेषता, बलअनंत सुशक्ति अशेषता ।
असमरूप उदार समंकरं, अपरदेव नहीं तुमतैं परं ॥ ९ ॥
करन तात सुवृच्छ अनंद हो, सुभग मात सुतारा·नंद हो ।

लसत है गज लच्छन सोहनो , सुभगरूप त्रिलोकविमोहनो ॥ १० ॥
यह कृपा युगमंधर कीजिए, दरश मोहि प्रतच्छ जु दीजिए ।
तुम कहावत दीनदयाल हो, करि यहीं हमरी प्रतिपाल हो ॥ ११ ॥

घत्ता छंद ।

जय जय जगसारं विगतविकारं सुखित अपारं जितमारं ।
हनि अघ जंजारं सुनहु पुकारं युगमंधर भवभयहारं ॥ १२ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थयुगमंधरजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल छंद ।

युगमंधरकुं यजत सजत सुखसार है ।
तजत संग दुर्बुद्धि सु सुमति अपार है ॥
सुरतिय लोचन भ्रमर कंज मुख तासको ।
होत भवन परिपूर अमल यश जासको ॥ १ ॥

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इत्याशीर्वादः ।

इति युगमंधरजिनपूजा ॥ २ ॥

अथ श्रीबाहुजिनपूजा ।

अडिल्ल छंद ।

बाहु सुभट जुगभेद बाहुबल बंडतैं ।
साजि समभाव सनाह ध्यान असिचंडतैं ॥
किये कर्मरिपु खंड सुतप रनखेतमैं ।
थापत हूं तुहि देव यजनके हेत मैं ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथ अष्टक ।

(छंद राग होली जंगलो तथा काफी)

जल सुंदर शुचि श्वेत मनू सुरभोग लसै है ।
सो भरि भृंग चढात तृषागद मूल नसै है ॥

शुद्ध वचन मन अंग हृदैवर भक्ति सजै है।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै है ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जो तज परासि समीर लगे तरुवृंद वसै है।
सो श्रीखंड चढात महा अघताप नसै है ॥
धरै सुरभि शरीर फेरि शिवथान लसै है।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै है ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

शुचि तंदुल अति श्वेत मनूं शशिजोति लसै हैं।
किधौं गुलिकगन मंजु लखे दृग मन हुलसै हैं ॥
अक्षत औघ चढात लहै अक्षतपद ये हैं।
सोही चतुर नर सार जिनश्रीबाहु यजै हैं ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

जिसबल मार प्रचंड मार सुर नर उर देहैं।
सो वर गंध प्रसून भव्य निज करमें लेहैं ॥
श्रीप्रभु चरन चढात मनोहर पीर नसे हैं।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजे हैं ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥
स्नेह सुरभि रसपूर सुव्यंजन सुंदर जे हैं।
फीनी घेवर आदि थाल भरि भवि कर लेहैं ॥
श्रीपति चरन चढात रोग क्षुध मूर नसै हैं।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजे हैं ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥
नाशन तमव्रज मूर दीप घृतपूर लसैहैं।
अथवा ज्योति कपूर महादुतिकूं सरसे हैं ॥
वारत छविपर भव्य लखे निज आतम जेहैं।

सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै हैं ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

ले श्रीखंड कपूर भूरि वर गंध सजे हैं।
गंधथकी मंडरात श्याम अलिपंक्ति सजे हैं ॥
खेये पावकसंग नाशि विधि सुगुन भजे हैं।
सो ही चतुर नर सार जिनश्रीबाहु यजे हैं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

लांगल क्रमुक गवाक्ष आम्र निंबुक सरसै हैं।
नारंगी वररंग दाख रंभाफल लेहैं ॥
श्रीधर चरन चढात मोक्षफल पावत वे हैं।
सो ही चतुर नर सार जिनश्रीबाहु यजै हैं ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गंधाक्षत फूल चारु वर-दीप सजे हैं।

धूप फलौघ मिलाय भाव निज शुद्ध भजै हैं ॥
अर्घ चढावत भव्य सार निजनिधि गहि लैहैं ।
सो ही चतुर नर सार जिन श्रीबाहु यजै हैं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

अनुभव सुमन सुयोगतें, उपजी सरस हिलोल ।
किये दूरि परमल सकल, सरसत सुगुन किलोल ॥ १ ॥

दीपकला छंद ।

जय बाहुजिनेश्वर जगतराय, सुग्रीव पिता विजया सुमाय ।
राजै मृगलच्छन शोभमान, शुचि जन्म सुसीमा नगर थान ॥ २ ॥
श्रमसलिलरहित कलिमल सुनांहि, वर रुधिर छीररंग अंगमांहि ।
सम चतुर लसै संस्थान सार, शुचि प्रथम सार सँहनन सुधार ॥ ३ ॥

जितमाररूप राजैं अपार, तन गंधजहं सब गंधसार ।
तिव शुभ लच्छन मंडित सुजान, बल अतुल अंग धारत महान ॥४॥
हितमित वर वचन सुधासमान, ये दश अतिशय धारत महान ।
फुनि तपबल केवलज्ञान होत, तब दश अतिशय अदभुत उद्योत ॥५॥
चहुंधा शत शत योजन सुभिक्ष, नभगमन जु वध नहिं जीव अक्ष ।
उपसर्गरहित वर्जित अहार, दरशै चहुंधा आनन सुचार ॥ ६ ॥
विद्या अशेष ईश्वर जिनंद, विन छांह फटिक दुति तन अमंद ।
नहिं पलक-पतन नैनन-मझार, नख केश बढै नांही लगार ॥ ७ ॥
चोदह सुरकृत राजैं अनूप, तिन संयुत सोहै जगतभूप ।
भाषा सु अर्धमागधि अनूप, सब जीव मित्रता भावरूप ॥ ८ ॥
षट ऋतुफल फूल फलै सदीव, दरपन सम अवनि लसै अतीव ।
सब जीव परम आनंदरूप, योजन भुवि सुर मर्जैं अनूप ॥ ९ ॥

सुर मेघ करै जलगंधवृष्टि, पदतर सरद्दग-भुजकंज सृष्टि।
भुवि मंडल सोहै शशि सरूप, निरमल नभ अरु दश दिश अनूप ॥
सुर चतुर-निकाय सु जय भनंत, वर धर्मचक्र आगें चलंत।
वसु मंगलद्रव्य लसै अनूप, इन अतिशययुत जिनराज भूप ॥ ११ ॥
वसु प्रातिहार्य उपमा न जास, जहँ तरु अशोक सब शोकनाश।
मन हर्षित सुर बरसात फूल, दिव्यध्वनि भव दुख हरन मूल ॥ १२ ॥
चामर मनु सुरसरिता तरंग, सिंहासन है मनु मेरुश्रृंग।
भामंडल भव दरसात सात, रिपु मोह विजय दुंदुभि जितात ॥१३॥
अनुपम त्रय छत्र जु लसै शीश, ऐसी प्रभुतायुत जगत ईश।
सुख दरश ज्ञान वीरज अनंत, इम षट चालिस गुनधर महंत ॥१४॥
तुम धन्य देव अरहंत सार, निर आयुध निरभय निरविकार।
जुत विभव परम वर्जित सु संग, लखि नग्न अंग लाजै अनंग ॥१५॥

१ । सुवर्ण कमल ।

तुम धारत हो करुना अपार, सुन देव अबै मेरी पुकार ।
मम कष्ट हरो सब भेद जान, तुम सेव सदा जाचैं सु "थान" ॥ १६ ॥

घत्ता छंद ।

शिव ! शिव शिवकर वारिधि भवतरि, अघटित सुख परिपूरभरं ।
मन वच तन ध्याऊं गुनगन गाऊं, बाहूजिन अघ औघ हरं ॥ १७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीबाहुजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

अडिल्ल ।

ले पावन वसु द्रव्य पाणियुग धारिकैं ।
यजैं बाहुजिन भव्य गुणौघ उचारिकैं ॥
ते निजगुन परिपूर होत भ्रम मानिकैं ।
कर्मशत्रु दल हरैं शक्ति निज ठानिकैं ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीबाहुजिनपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

अथ श्रीसुबाहुजिनपूजा ।

अडिल्ल छंद ।

समवसरन जिस भवन भवन भूषन लसै ।
परमौदारिक देह देखि जन दुख नसै ॥
सो श्रीदेव सुबाहु दया उर ल्यायकैं ।
तिष्ठ तिष्ठ जिनराज निकट मम आयकैं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुपरमदेव ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुपरमदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुपरमदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट् ।

अथ अष्टक ।

मनमोहन छंद । चाल नंदीश्वरपूजाकीसी ।

शुचि वारिधि क्षीरसमान, नीर सुपावन है ।
मन संतनसो अविकार, सुख सरसावन है ॥

धरिहूं धरिपै त्रयधार, त्रय तप नाशनकूं ।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं ॥ १ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

वर कुंकुम पूरित रंग, सजल पटीर घसैं ।
वह पूरित गंध गहीर, तीक्षण ताप नसैं ॥
धरिहूं तुम पायन ईश, भवतप नाशनकूं ।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं ॥ २ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसुश्रीबाहुजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

शुचि तंदुल ओघ असंड, सुंदर अनियारे ।
द्युति धारत इंदु समान, नैननको प्यारे ॥
करिहूं वर अक्षत पुंज, अरि वसु त्रासनकूं ।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुभ सायकमंथन गुलाब, पंकज पावन है।
वर जाति जुही वकुलादि, सुमन सुहावन है॥
धरिहूं पद अग्र जु ल्याय, मनशर नासनकूं।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं॥ ४॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेंद्राय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

पकवान सु सुंदर सार, घेवर आदि घने।
षट हु रसपूर सुगंध, मनहर सद्य बने॥
सो नेवज देहुं चढाय, सुबल प्रकाशनकूं।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं॥ ५॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेंद्राय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

तमहारन ज्योति अनूप, पूरित स्नेह लसै।
वह उज्ज्वल जिन तन मध्य, वारत हम दरसै॥

सो मानो विधि अवशेष, हेरत नासनकूं ।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगरादिक चूरन चारु, करि कर धारत हैं ।
वर गंध हुताशन संग, हम इम जारत हैं ॥
दुखदायक दुर्जन जानि, वसु अरि नासनकूं ।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल खारिक दाख विदाम, एला आदि घने ।
अरु केला दाडिम आम, श्रीफल स्वाद सने ॥
लहि धारूं तुम पद भेट, दुर्गति नाशनकूं ।
यजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं ॥ ८ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन तंदुल फूल, चरु वर दीप लसैं ।
वर धूप फलौघ मिलाय, कहियत अर्घ इसैं ॥
तुव भेट करूं उमगाय, अघगन नाशनकूं ।
पाजिहूं जिनदेव सुबाहु, निजगुन भासनकूं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

अजयंजयी अजयी सु अज, भव अज भय-हरतार ।
रहितकर्मरज कुजदलन, जय सुबाहु बलधार ॥ १ ॥

छंद ।

जय जिनदेव सुबाहुवरं, केवलभानुप्रभानिकरं ।
है निसढिल नरेश पिता, मात सुनंदा शोभयुता ॥ २ ॥

पावन जन्मपुरी अवधी, है भव ज्ञान त्रियुक्त सुधी ।
चिह्न लसै कपिको ध्वजमें, इंद्र नमें पदपंकजमें ॥ ३ ॥
वैन सुधासम है सुथरे, सो गनईस प्रकाश करे ।
मोह महाभ्रम नाशन है, तत्त्व सु सात प्रकाशन है ॥ ४ ॥
जीव भन्यो उपयोगमई, और अजीव जु है जडई ।
आस्रव हैं परप्रीतिहिसें, सो रसदायक बंधबसें ॥ ५ ॥
संवर आस्रव रोक लसें, दे रस कर्म द्विभाँति नसें ।
सो यह निर्जरभाव लसें, है सुखदाजुत संवरसें ॥ ६ ॥
मोक्ष सुबंधन मोक्ष करें, ये शिवदाय प्रतीत धरें ।
क्षेत्र त्रिलोक अनादि लसैं, कारक धारक नाहिं इसैं ॥ ७ ॥
ना हरता कोउ है जु इसै, ते ध्रुव औ उपजै विनसै ।
ये सत लच्छन मंडित हैं, भाखत यों शत पंडित हैं ॥ ८ ॥

जीव भन्यो उपयोग जुई, पुद्गल है गुन च्यारमई ।
गंध स्पर्श रु वर्ण धरै, औ रसरूप मिलै विछुरै ॥ ९ ॥
गौन सहायक धर्म गिनें, स्थान सहाय अधर्म भनें ।
दे अवकाश अकाश सही, जो वरतावन काल कही ॥ १० ॥
क्षेत्र रु काल जु भावनकी, होत सहाय जसी जिनकी ।
ता समही सब रूप लसैं, सो सब देव तुम्हैं दरसैं ॥ ११ ॥
देखिं इन्हें निजरूप गहें, सो तबही सुखसिंधु लहें ।
है परप्रीति नहीं उरमें, नाहिं तहां सुख है धुरमें ॥ १२ ॥
तो शरना इह हेत गही, हो हमकूं सरधा जु यही ।
मो मन तो पदकंज धरो, भो जगपाल निहाल करो ॥ १३ ॥
ये रसना मुखमें जु रहै, तौलग तो गुनगान चहै ।
प्रीति हटै परतें हमरी, चित्त वसै छवि या तुमरी ॥ १४ ॥

औगुनकूं न हिये धरिये, दीन निहारि दया करिये ।
"थान" गही शरना तुमरी, व्याधि हरो जिनजी हमरी ॥१५॥

निशपालिका छंद ।

रूप निज भालि कर भालि अति तीक्षनी ।
ध्यान धनु साधि करि सैन्य विधिकी हनी ॥
देव वरबाहु पदकंज जन जो यजैं ।
ठोकि भुजदंड अरिमोह जयमों सजैं ॥ १६ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसुबाहुजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल छंद ।

चरन सरोज सुबाहु तने जन जो यजैं ।
तजैं अविद्याभाव स्वानुभवको भजैं ॥
पुत्र पौत्र धन धान्य सौख्य इह भव लहैं ।
परभव वरपद भोगि मुक्तिपदवी गहैं ॥ १ ॥

इति आशीर्वादः । इति श्रीसुबाहुजिनपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

अथ श्रीसंजातकजिनपूजा।

छप्पय छंद।

द्रव्य क्षेत्र यम भाव, भावनिजजाति भिन्न चिर।
चिरसंगी पर सकल, सकल निज भिन्न चतुक कर॥
कर विचार शुभ येह, येह भवतिथि असार लखि।
लखि अनूप चितरूप, रूप रस गंध वरण अखि॥
अखिलै सुभिन्न अवलोकि निज, निजस्वभाव थिरभाव गिन।
करिकैं जु महर मोपरि इतै, तिष्ठ तिष्ठ संजात जिन॥ १॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीसंजातकजिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

अथ अष्टक।

छंद मनहंस।

जल श्वेत गंगतरंगिनीसम ल्यायके।
भरि भृंग धारि चढात हूं उमगायकैं ॥
दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके।
वह पाय पावन पूजिहूं जगतेशके ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसंजातकजिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

सुरवल्लभी वररंगपूरित पावनी।
घसि नीर चंदनसंग ताप नशावनी ॥
दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके।
वह पाय पावन पूजि हूं जगतेशके ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसंजातकजिनेंद्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके ।
वह पाय पावन पूजिहूं जगतेशके ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसंजातकजिनेंद्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

शुचि दीप सुंदर धारिकै हर्षात ही ।
जिन आरती करते नशै अघव्रातही ॥
दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके ।
वह पाय पावन पूजिहूं जगतेशके ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसंजातकजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दश गंध चंदन आदि उत्तम हाथही ।
करि अग्निसंगमजारि कर्म अनादिही ॥
दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके ।
वह पाय पावन पूजिहूं जगतेशके ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसंजातकजिनेंद्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके ।
वह पाय पावन पूजिहूं जगतेशके ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसंजातकजिनेंद्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

शुचि दीप सुंदर धारिकै हर्षांत ही ।
जिन आरती करते नशै अघव्रातही ॥
दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके ।
वह पाय पावन पूजिहूं जगतेशके ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसंजातकजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दश गंध चंदन आदि उत्तम हाथही ।
करि अग्निसंगमजारि कर्म अनारिही ॥
दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके ।
वह पाय पावन पूजिहूं जगतेशके ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसंजातकजिनेंद्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल पक्क चूतक चारु दाख अनार ही ।
वर वीजपूरक लौंग खारिक चार ही ॥
दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके ।
वह पाय पावन पूजिहूं जगतेशके ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसंजातकजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गंध तंदुल पुष्प नेवज दीपही ।
वर धूप ले फल औघ अर्घ अनूपही ॥
दुतिवंत शेखर नम्र होत सुरेशके ।
वह पाय पावन पूजिहूं जगतेशके ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसंजातकजिंनद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

छप्पय छन्द

जितदुराश दिगवास आश शिववास जास उर ।

चिद्विलास सुविकास अमितगुनराशि ज्ञानपर ॥
वरविभूतिपरकास दास सुरपति सब सेवैं ।
धरत ध्यान तपराशि नाशि भ्रम निजगुन वेवैं ॥
बल अतुल राशि अरित्रास करि, असमशक्ति संजातधर ।
करुना प्रकाशि निजदासपै सुख विकाशि अघ नाशकरि ॥ १ ॥

दीपकला छंद ।

संजातक सुनि मेरी पुकार, विधिवश मैं दुख भुगते अपार ।
वर भाग्य उदय तुम वचनद्वार, यह जानि परी हमकूं अवार ॥ २ ॥
विधि बंधनकारन पंच एव, तिनमें मिथ्यात जु पंचभेव ।
सो प्रथम नाम एकांत जास, जिम वस्तु नहिं पूरन वस्तु भास ॥ ३ ॥
विपरीत नाम दूजो विरूप, दरसात औरसैं और रूप ।
तीजो सु विनयनामा कुभाव, जिसवल श्रद्धा चंचल लखाव ॥ ४ ॥

संशय चतुर्थ जानो अहेत, सो सत्यप्रतीति न होन देत ।
पंचम अज्ञान विशेष जानि, जिसबल न सकें निजगुन पिछानि ॥ ५ ॥
फुनि अविरत विरत स्वभावहीन, परमाद अक्षवश स्नेहलीन ।
कसि है जु कषाय सु करत क्षोभ, यह क्रोध मान माया रु लोभ ॥ ६ ॥
उपहास्य अरति रति शोक जानि, भय जुगुप्सा रु त्रय वेद मानि ।
चल तन मन वचन सुयोग तीन, ये बंधनकारन लिए चीन ॥ ७ ॥
सो बंध चतुर्विध है सुजान, पहले प्रकृती सु सुभाव मान ।
थितिबंध करै थितिको विथार, अनुभाग तृतिय रस देनहार ॥ ८ ॥
आतमप्रदेश परचय सुजानि, सो बंध प्रदेश चतुर्थ मानि ।
करि भूलि बसैं वसु भांति येह, परिवर्तन काल किये अछेह ॥ ९ ॥
दुख भुगते सो कहि सकत नांहि, सब झलकि रहे तुव ज्ञानमांहि ।
वर मात देवसेना विख्यात, नृप देवसेन पितु विमल गात ॥ १० ॥

अलकापुर पावन जन्म थान, युत सूर्य-चिन्ह राजत निशान ।
वर धर्मचक्र धारत जगीश, तुम गुन नहि वरन सकैं फनीश ॥ ११ ॥
तुम दीनदयाल कहात देव, यातैं हम शरन गही स्वमेव ।
विधिबंधयोग्य दुरभाव हानि, करि क्षायिक भाव कृपानिधान ॥ १२ ॥
यह जाचतहूं कर जोरि देव, भव भव पाऊं तुव चरनसेव ।
तुव वचन सुधारसपान सार, ये' थान" चहै भव भव-मझार ॥ १३ ॥

घत्ता छन्द ।

जय चिदवर वरछवि मोहअचलपवि, चारितधरधरधरनिधरं ।
संभ्रमतपहर अवि तन-दुतिजितरवि, संजातक जिन श्रेयकरं ॥ १४ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थविद्यमानश्रीसंजातकजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल छंद ।

संजातक जिन सेव करत कर जोरिकैं ।
जानत भवि निजजाति नेह परमोरिकैं ॥

प्रकट होत सुख अघट सुघटमें ता घरी ।
पूजें मनकी आश वास है निजपुरी ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीसंजातकजिनपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

अथ स्वयंप्रभुजिनपूजा ।

तोटक छन्द ।

चिद्रूप अनादि स्वयं निज ही, लखि लब्धि वसैं प्रभुता सुगही ।
इम सत्य स्वयंप्रभु दासपतें, करिकै करुना अब तिष्ठ इतैं ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्तमानश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथ अष्टक ।

त्रिभंगी छन्द ।

जल प्रासुक सुंदर गंध महा भर शीतलताकरि तृटहारी ।
त्रय ताप विनाशन दुःखप्रणाशन धार धरूं धरि भरि झारी ॥
हम यजें कृपालं भवभयटालं अरिउरशालं सुकुमालं ।
मम हनि अघजालं हे जगपालं करहु निहालं वरभालं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केसर शुभरंगी परिमलचंगी घसि हरिसंगी तापहरी ।
प्रभु चरन चढावत सुखसरसावत देह सु पावत गंध भरी ॥
हम यजें कृपालं भवभयटालं अरि उरशालं सुकुमालं ।
मम हनि अघजालं हे जगपालं करहु निहालं वरभालं ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

मुक्तासम सुंदर गंध भरा वर सखर अखंडित थाल भरैं ।
पद अक्षय पावैं कुगति नसावैं जो भवि अक्षत पुंज करैं ॥
हम यजैं कृपालं भवभयटालं अरिउरशालं सुकुमालं ।
मम हनि अघजालं हे जगपालं करहु निहालं वरमालं ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं सिद्धक्षेत्रस्थश्रीअनंगकुमारजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सेवति सुंदर कुंद जुही वर कंज गुलाब जु मनहारी ।
शुभ जाति चमेली राय जु बेली सुमन सुहावन भरि थारी ॥
हम यजैं कृपालं भवभयटालं अरिउरशालं सुकुमालं ।
मम हनि अघजालं हे जगपालं करहु निहालं वरमालं ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं सिद्धक्षेत्रस्थश्रीअनंगकुमारजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

घेवर रस भीने पाक नवीने हैं रंग भीने बलकारी ।
क्षुत रोगनिवारन निजबलधारन चरन चढाऊं भरि थारी ॥

हम यजैं कृपालं भवभयटालं अरिउरशालं सुकुमालं ।
मम हनि अघजालं हे जगपालं करहु निहालं वरभालं ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

शुचि वर्तिकपूरी कै घृतपूरी तमगनचूरी जोतिभरी ।
भरिकैं भरि थारी करत उतारी सुगुन उजारी होत खरी ॥
हम यजैं कृपालं भवभयटालं अरिउरशालं सुकुमालं ।
मम हनि अघजालं हे जगपालं करहु निहालं वरभालं ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

शुचि अगर सुचंदन कदलीनंदन अलिगनरंजन चूर्णवरं ।
वसुविध अरिनाशन दुःखप्रनाशन लेय हुताशन संग धरं ॥
हम यजैं कृपालं भवभयटालं अरिउरशालं सुकुमालं ।
मम हनि अघजालं हे जगपालं करहु निहालं वरभालं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल शुचि नारंगी कनक सुरंगी सुंदर पुंगी अंबवरं ।
मिष्ट सु वर केला खारिक एला श्रीफल पिस्ता जायफलं ॥
हम यजें कृपालं भवभयटालं अरिउरशालं सुकुमालं ।
मम हनि अघजालं हे जगपालं करहु निहालं वरमालं ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत सुमन सुगंधित नेवज सुदंर स्वादवरं ।
दुति दीप सुधूपं फल जु अनूपं ले शुचिरूपं अर्घकरं ॥
हम यजें कृपालं भवभयटालं अरिउरशालं सुकुमालं ।
मम हनि अघजालं हे जगपालं करहु निहालं वरमालं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

जन्मथान त्रिजया पुरी, जयो मंगलानंद ।
सुहृद्मित्र नृप तात जसु, लसै चिन्ह ध्वज चंद ॥ १ ॥
जास गिरा पावन गदा, हरन मोह दुरशोध ।
पावन पावन उर धरूं, पावन पावन बोध ॥ २ ॥

सुन्दरी छंद ।

वसुधरापति देव स्वयंप्रभू, अरज दासतनी सुनिये विभू ।
मम सु भूलि बसे बहु कर्म ये, चिरलगे भव कष्ट महा दिये ॥ ३ ॥
करन मत्सरके परभावतें, बहुरि विघ्न भरे दुरभावतें ।
करत साधनको उपघात सो, दरश ज्ञान प्रभाव नसात सो ॥ ४ ॥
दुरत ज्ञान सु पंच प्रकार है, दरश आतमको न निहार है ।

द्विविध वेदनि कर्म तृतीय है, रस शुभाशुभ देत स्वकीय है ॥ ५ ॥
प्रथम सो सुखदायक मानिये, बँधत सो इह भांति प्रमानिये ।
सकलजीव व्रतीजनकी दया, बहुरि दान चतुर्विधको दिया ॥ ६ ॥
धरत संयम राग लिये सु जो, करत योगनकी चलना न जो ।
असद होत जु दुःख विशेषतैं, रुदन पान रु शोक कुवेषतैं ॥ ७ ॥
करत हैं वध जो दुरभावतें, अरु करैं परिदेवन चावतें ।
स्वपरकैं परतैं परनाम ये, परत बंध महा दुखधाम ये ॥ ८ ॥
भनत रूप विरूप सुदेवको, निगम संघ रु धर्म सुभेवको ।
दरश मोह जु बंध महान ये, परत आतमशक्ति दुरान ये ॥ ९ ॥
वश कषाय उदै परिणाम जो, करत चारित मोह जु तीव्र जो ।
दरश चारित द्वैविध मोह ये, करत हैं निजशक्ति विछोह ये ॥ १० ॥
बहु परिग्रह आरँभ जासके, नरक आयु बंधै जिय तासके ।

कुटिल वा तिर्यंच गती सुदा, अलप आरँभ मानव जन्मदा ॥ ११ ॥
सहित राग असंजम संजमं, फुनि अकाम जु निर्जरतापमं ।
तप अज्ञान रु सम्यक हेतु हैं, सुभग देवगती यह देतु हैं ॥ १२ ॥
इम चतुर्विध आयु सुकर्म है, कुटिल योग विवाद सुधर्म है ।
अशुभ नाम कुवंध सु लेत हैं, उलटि जो इनतें शुभको वहैं ॥ १३ ॥
तुरत वंध करै शुभनाम ते, द्विविध नाम भनैं मतिधाम ते ।
करत जो परकी विकथा कुधी, वहुरि आतमशंस करै सुधी ॥ १४ ॥
पर तने गुनकूं जु दुरात हैं, कुल जु नीच वहै नर पात हैं ।
करत जो इनतें विपरीतता, धरत है कुल उच्च पुनीतता ॥ १५ ॥
कर्म गोत्र सु द्वैविध यों कहैं, करत विघ्न अलाभ महालहैं ।
यह कुभाव टरैं उरतें जवै, सुखित होय रहै शिवमें तवै ॥ १६ ॥
विरद दीनदयाल सँभारिये, दुखित देख दया उर धारिये ।
तिमिरमोह महा उरतें हरो, निजस्वरूप प्रकाशि सुखी करो ॥ १७ ॥

छंद तरंगिक ।

विध अनोकुहकी जरकी निरमूलता ।
सुभग आतमके गुनकी अति थूलता ॥
विघनकी हरनी करनी दुखसाल है ।
जिन स्वयंप्रभुकी जयदा जयमाल है ॥ १८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीस्वयंप्रभुजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल छंद ।

स्वयंप्रभू जिनदेव सेव जो जन भजै ।
थिर करि मन वचकाय अनाकुलता सजै ॥
करै वास उर जास रूप जगभूपको ।
उदय होत है प्रकट भानु निजरूपको ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

इति श्रीस्वयंप्रभुजिनपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

अथ श्रीऋषभाननजिनपूजा।

—:०:—

छप्पय छंद।

शुभगकीर्तिनृप तात वीरसेना सुमातवर।
जन्मथान अतिरम्य सुसीमा नगर सुखाकर॥
सिंह चिह्न ध्वज जास उदित व्रत अंशु भुवन थल।
कर निजऋद्धिप्रकाश तिमिर अघपटल सकल दल॥
जय ऋषभानन जिन भानवर, भव्यकोकगनशोकहर।
थापूं सु तोहि पद यजनहित, तिष्ठ तिष्ठ वरबोधकर॥ १॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

मोदक छंद।

नीर महा अति शीतल लेकरि, प्राशुक सुंदर भृंगविषै भरि।
मोह महादव अग्नि बुझावन, हे जिन! पूजत हूं तुव पावन ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गंध भरा शुचि चंदन बावन, केसर मेलि घसूं मन भावन।
ताप त्रिवेद महातपनाशन, पूजत हूं तुमको वरशासन ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल ओघ अखंडित उज्ज्वर, मंडितगंध हिमाभ मनोहर।
पावन मैं पद अक्षय कारन, पूजतहूं तुमको भयवारन ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कंज कदंब जुही करना वर, केतकि गंध सुगंध महा भर।
ले समरायुध पीर नशावन, पूजतहूं तुमको जगपावन ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

घेवर बावन चंद्रकला वर, पापर खज्जक पाक बनाकर।
रोग छुधा जरतैं जु निवारन, पूजत हूं तुमको जगतारन ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्राय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक जोति प्रकाश महाकर, वाति कपूर सुभाजनमें धर।
लोक अलोक स्वरूप निहारन, पूजतहूं तुमको शिवकारन ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

ले अगरादिक चूरन वा वर, गुंज करै भ्रमरावलि जापर।
कर्म महारिपु अष्ट प्रजारन, खेवतहूं गुन अष्ट जु धारन ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

सुंदर आम अनार सदाफल, खारिक दाख विदाम सुश्रादल।
मोक्ष महातरुके फल पावन, तोहि यजूं शिववाम रिझावन ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋभाननजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

नीर सु चंदन अक्षत केसर, नेवज दीप रु धूप सु लेकर ।
ले फलसंयुत अर्घ अनूपम, तोहि यजूं जिन कर्मविथादम ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

तालु ओष्ठके स्पर्श विन, धुनि घनसम अवदात ।
प्रकटत भ्रमतमहरनकूं, तरुण किरण मनु प्रात ॥ १ ॥

पद्धरी छंद ।

जय ऋषभानन मुनि जगतभूप, मैं एकभावमय निजस्वरूप ।
चिरतैं परपरणति संग पाय, परिवर्त्तन भाव धरे अघाय ॥ २ ॥
निज पर मिल मूल सुभाव पांच, पहिचाने मुनि तुव वचन सांच ।
पहलो उपशम जानों सु एव, सो सम्यकचारित युगलभेव ॥ ३ ॥

दूजो क्षायिक सो नवप्रकार, है ज्ञान दरश अरु दान सार ।
त्रिद लाभ भोग उपभोग जान, वरवीर्य सुसम्यक चरण मान ॥ ४ ॥
ये प्रकट लसैं तुममैं सदेव, है मिश्र अष्टदशरूप एव ।
मति श्रुतावधिज्ञान रु कुज्ञान, मनपर्यय फुनि त्रय दरश जान ॥ ५ ॥
सो चक्षु अचक्षु रु अवधि एव, फुनि लब्धि पंचविध है स्वमेव ।
शुचि दान लाभ भोगोपभोग, युत वीरज पंच भये सयोग ॥ ६ ॥
सम्यक अरु चारित युगल जान, संयमासंयमसु एकमान ।
इम सब मिल वसुदश भाव येह, क्षय उपशम बल प्रकटै सुजेह ॥ ७ ॥
उदईक एकविंशति प्रकार, बरने जगपतिजू तुम निहार ।
गति नारक पशु नर सुर सु च्यार, तम मान कुटिल लालच असार ॥
तिय पुरुष नपुंसक वेद तीन, मिथ्यादर्श रु अज्ञान चीन ।
फुनि असिद्धत्व वामैं पिछान, लेश्या षट कृष्ण रु नील जान ॥ ९ ॥

कापोत पीत अरु पद्म एव, फुनि शुक्ल छठी जानो सुभेव ।
फुनि पारणामिकसु भाव तीन, जीवत भव्यत्व अभव्यलीन ॥ १० ॥
इनमें उदयिक भावनि प्रचार, परिवर्त्तन पंच किये अपार ।
भुगते मैं कष्ट अनादि देव, तिनको तुम पार लयो स्वमेव ॥ ११ ॥
इनतें उबारि लखि दीन मोहि, यह अरज करत है "थान" तोहि ।
पर परणतितें मनको हटाय, निजरूप हमें दीजे दिखाय ॥ १२ ॥

लीलाकर छंद ।

धारें जगाधीशके वैनकूं जो हिए माहि ।
छारें सरूपी तनें पारणामी उदै ताहि ॥
वारें चतू द्रव्यके पारिणामी भली भाति ।
सोही लहै सौख्य जोही गहै आपनो जाति ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीऋषभाननजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल छंद।

ऋषभानन जग जान यजत नर जो सही।
टरै सकल दुख द्वंद वरै अनुभवमही॥
मुक्ति महीरुह मंजु तहां लहलात है।
अनुपम सौख्य अनंत सुरस फल पात है॥

इत्याशीर्वादः।

इति श्रीऋषभाननजिनेंद्रपूजा समाप्ता॥ ८॥

——:०:——

अथ श्रीअनंतवीर्यजिनपूजा।

स्थापना—दोहा।

गहि निज सरल सुभाव सर, साधि ध्यानको दंड।
हर अनंत बल मोहको, जय जय वीर्य अखंड॥ १॥

छंद-झूलना ।

मेघ राजा पिता मंगला मात है चिह्न गजराजकी केतु राजे ।
जन्मके जोगतैं है महापावनी नग्र अवधी महासौख्य साजे ॥
अन अंतवीर्य तू धीर परपीरहा पेखि छवि चारुको मार लाजे ।
देवदेवेश हे तिष्ठ तिष्ठो इतै थापिहूं तोहि मैं पूजकाजे ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथ अष्टक ।

छंद चाल राग गणगौरीकीमें ।

प्रासुक जल गंगाद्रहके सम शीतल अति अभिराम ।
हरन दुरास प्याससहित हे जिन ! तोहि यजूं वरनाम ॥

लुभाये नेना रावंरी छविपै छविधाम । लुभाए नैना० ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केसर चंदन कदली नंदन मेलि घसूं अभिराम ।

भवभयतापनाशहित नुत मैं पूजूं पति शिववाम ॥

लुभाए नैनां रावरी छविपै छविधाम । लुभाये नैनां० ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

शाल अखंडित सौरभिमंडित मुक्तासम शुचिधाम ।

तोहि यजूं अक्षततैं हे जिन ! पावन अक्षय ठाम ॥

लुभाये नैनां रावरी छविपै छविधाम । लुभाये नैनां० ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्रेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुमन गुलाब जुही कुंदादिक गंध लिये अभिराम ।

अंग अनंगविथा हरिवेकूं धारूं तुव पद ठाम ॥

---

१ भाग हो ।

लुभाये नैनां रावरी छविपै छविधाम। लुभाये नैनां० ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

सुरभि स्नेहपूर पाकादिक नेवज आति अभिराम।

लहि पूजूं श्रीपति पद तेरे करन छुधा बलखाम ॥

लुभाये नैनां रावरी छविपै छविधाम। लुभाये नैनां० ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

भाजन कनक कपूर वाति धर तमनाशन दुतिधाम।

निजस्वरूपभासन तुव छविपर वारि करूं परनाम ॥

लुभाये नैनां रावरी छविपै छविधाम। लुभाये नैनां० ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

चूरन अगर तगर अरु चंदन गंध लिये अभिराम।

खेऊं तुम पद अग्र जगोत्तम खोवन वसुविध नाम ॥

लुभाये नैनां रावरी छविपै छविधाम । लुभाये नैनां० ॥ ७ ॥

ओं ह्री विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

केला दाडिम आम जंभीरी एला अति अभिराम ।
भेला करि धरिहूं तुम पायन पावन शिवफल वाम ॥
लुभाये नैनां रावरी छविपै छविधाम । लुभाये नैनां० ॥ ८ ॥

ओं हीं विदेहक्षेत्रस्थश्री अनंतवीर्यजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत समरायुध नेवज शुचि बलधाम ।
दीप धूप फल अष्ट द्रव्य लहि अर्घ धरूं अभिराम ॥
लुभाये नैनां रावरी छविपै छविधाम । लुभाये नैनां० ॥ ९ ॥

ओं हीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

धन्य जगतपति जन्म तुव, मनहु सुमंगल प्रात ।
खिले भविनजिय जलज जिम, नस्यो अमंगलव्रात ॥ १ ॥

चौपाई छंद ।

सुनो अनंतवीर्य जिनदेव, भूलि भाववशतैं स्वयमेव ।
भावकर्म रागादिक भाव, द्रव्यकर्म वसु प्रकृति स्वभाव ॥ २ ॥
देहादिक नोकर्म सु येह, लगे अनादि संग मम तेह ।
सागर बंध लिये थिति सोहि, काल अनंत भ्रमायो मोहि ॥ ३ ॥
योजन एक बडो गहराय, इतनोही मुखवेध सुभाय ।
ऐसो कूप कलपना करै, ताकूं पुनि ऐसी विध भरै ॥ ४ ॥
उत्तम भोगभूमि वर खेत, तामधि जो उपजै शुभहेत ।

भेडसूनुकचअग्र सुलेत, खंड सूक्ष्म तिनके करि लेत ॥ ५ ॥
भरि तामें काढै इह भाय, खंड एकशत वर्ष विताय ।
कूप उदर जब खाली होय, सो व्यवहार पल्य करि जोय॥ ६ ॥
वर्ष असंख्य कोटिसम थान, तिन रोमनिकी राशिप्रमान ।
करि कल्पना घात तिह करै, समय समय प्रति एक जु हरै ॥ ७ ॥
ये उद्धारपल्य मन आनि, दीप उदधि संख्याहित जानि ।
याके रोम पुंज हैं जिते, कोडाकोडि पचीस जु तिते ॥ ८ ॥
वरस एक शतके फुनि जान, समय करै आगम परमान ।
रोम उधार पल्यकी राशि, करो घात तिन बुद्धि प्रकाश ॥ ९ ॥
ते दश कोडाकोडि प्रमान, अद्धा सागर होत महान ।
थितिप्रमान यातैं कर जोय, ये तुम वैन जिताई सोय ॥ १० ॥

१ भेडके बच्चेके बाल ।

ज्ञान दर्शनावरण द्वि मान, वेदनि अंतराय फुनि जान।
करै बंध उतकृष्ट जु च्यार, कोडाकोडि तीस दधि सार ॥ ११ ॥
सत्तर कोडाकोडि प्रमान, सागरपर मोहनि थिति जान।
कोडाकोडि वीस दधि होय, नाम गोत्र की परथिति जोय ॥ १२ ॥
है तेतीस उदधिपरमान, आयुकर्मकी थिति पर जान।
अपर आयु वेदनि विध दोय, थिति द्वादश मुहूर्त अवलोय ॥ १३ ॥
नाम गोत्र दोऊं विधि जान, वसु मुहूर्त थिति अल्प प्रमान।
ज्ञानदर्शनावरणं जु दोय, मोहनि विघ्न आयु फुनि सोय ॥ १४ ॥
थिति अंतरमुहूर्त इक मान, ये तुम भाषित है भगवान।
भुगती मैं परिवर्तनरूप, सो सब तुम जानतु जगभूप ॥ १५ ॥
है भय भीत शरण तुव गही, इनतैं वेग छुडावो सही।
दीनदयाल दयानिधि नाम, अब बिलंब करनो किहि काम ॥ १६ ॥

भ्रमरावली छंद।

अगतागत तू विगताविधिवंधविथा।
असमं वरभूतियुता अनुभोसुरता॥
धरता वरबैन सुधा शिव! तू शिवदा।
हमकूं वरभक्ति मिलो कर श्रेय सदा॥ १७॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्रेभ्यो जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १७॥

अडिल्ल छंद।

देव अनंतवीर्य पदपंकज पावने।
पूजें भव्य उचारि सुगुन मन भावने॥
तन मन पावन तास होत सब सुख सरै।
आकुल दाह विहाय निराकुलता वरै॥ १८॥

इत्याशीर्वादः।

इति श्रीअनंतवीर्याजिनपूजा समाप्ता॥ ९॥

अथ श्रीसूरप्रभुजिनपूजा ।

रोला छंद ।

नागराय जसु तात मात भद्रा सुभद्रमन ।
जनमपुरी विजया विलोकि मोहित ह्वै सुरगन ॥
भववारिध मनु सेतु केतु तिमरारि चिन्हधर ।
सूरप्रभु जिन इतैं तिष्ठ कर कृपा दासपर ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुपरमदेव ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुपरमदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुपरमदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथ अष्टक ।

छंद राग सारंग सोरठ ।

जल सुंदर तृटहर अतिपावन है हिमसम अवदात ।
भरि भृंगार धार धर धारत जनम मरन नशजात ॥

भव भय पीर हरो म्हारी, तोहि यजूं जी वरवीर । भवभय० ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा । १ ॥

मलय जु मंजु महक ताकी पर षट्पदगन मँडरात ।
घसि जलयुत तव चरन यजत जिन भवतप ततछिन जात ।
भवभय पीर हरो म्हारी तोहि यजूंजी वरवीर । भवभय० ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अक्षत सित शशिगो तिनके सम निरखत मन ललचात ।
मंजु पुंज तव चरनकंज तर करत अखय पद पात ॥
भवभय पीर हरो म्हारी तोहि यजूंजी वरवीर । भवभय० ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कंज कदंब गुलाब केतकी मरवा अति महकात ।
षटपदरंजक चरनकंजतर धरत समरसर जात ॥

भवभय पीर हरो म्हारी तोहि यजूंजी वरवीर । भवभय० ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

फेनी त्रिकुट इंदरस गूजा घेवर मन ललचात ।
चरु बलकार चढात चरन तव निजबल प्रबल लहात ॥
भवभय पीर हरो म्हारी, तोहि यजूंजी वरवीर । भवभय० ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

ललित जोति दीपक तमभंजन धरि भाजन अवदात ।
करत आरती श्रीपति तेरी केवलदुति दरशात ॥
भवभयपीर हरो म्हारी, तोहि यजूंजी वरवीर । भवभय० ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

धूप अगर श्रीखंडचूर्ण पर, उमगे आलिंगन आत ।
ऐसो धूप धरत धूपायन, कर्म सबैं जरिजात ॥

भवभय पीर हरो म्हारी, तोहि यजूंजी वरवीर । भवभय० ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

चोचक चारु निंबु नारंगी, दाडिम दाख सुहात ।
दृग मनहर फल धरि तव पायन, भविजन शिवफल पात ॥
भवभयपीर हरो म्हारी, तोहि यजूंजी वरवीर । भवभय० ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत मनमथसर नेवज नेन सुहात ।
दीप धूप फल अर्घ बनाकर पूजूं जिन हरषात ॥
भवभयपीर हरो म्हारी, तोहि यजूंजी वरवीर । भवभय० ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

—— ०: ——

अथ जयमाला ।

दोहा ।

पूरि परमद्युतितैं रहे, भूरि भरमतम चूर ।
हानि कुतर्क तारक प्रभा, सूरप्रभू वचसूर ॥ १ ॥

तोटक छंद ।

तव जोतिसरूप घटै न हटै, ति दिकूमत सर्व सदीव रटै ।
अकलंक चिदंक समं असमं, वृष अंक निशंक स्वयं विषमं ॥ २ ॥
अकलं अचलं सकलं विमलं, अ अलं सअलं सुवचं सुअलं ।
अतनं अगनं सुमनं दमनं, रमनं वमनं भवदुःखगनं ॥ ३ ॥
दुखदाघहतार्थघनं सघनं, गरुडं दुररागफणीदमनं ।
अघओघघनं घनहो पवनं, दुरआपपिपासहनं सुवनं ॥ ४ ॥
अघटं विकटं निकटं सुघटं, अतटं सुनटं विरटं सुरटं ।

अखयं अभयं अजरं अमरं, साचिरं अचिरं सपरं अपरं ॥ ५ ॥
त्रिदवं अपदं अगदं सुसदं, सुखदं शिवदं शुभदं सुविदं ।
अभरं सभरं सुकरं निकरं, अगतागत तू जितकं समरं ॥ ६ ॥
न क्षुधा न तृषा नहि रागधृतं, नहि द्वेष रु जन्म जरा न मृतं ।
भय विस्मय रोग रु शोकहतं, नहि स्वाप महादुखदाय रतं ॥ ७ ॥
नहि स्वेद रु खेद जु मोह मदं, नहि आरति और सुचिंत हृदं ।
यह दोष महा दश आठ हने, वरवैन दयारसपूर सने ॥ ८ ॥
त्रय काल जु भूत रु वर्तन हैं, सुभविष्यत भेद कहे तुम हैं ।
त्रिन गोचर अक्ष पदारथ जे, सु जिताय दिये सबकूं जिम जे ॥ ९ ॥
हरते अनुभौ सुख होत महा, नहि लोक विरुद्ध प्रसंग तहां ।
भ्रमयं भवि भूल रहे सु जिन्हें, सुखपंथ जिताय दियो सु तिन्हें ॥ १० ॥
समये इक जो परतीति धरै, वह जीव अनूपम शक्ति वरे ।

परिवर्त्तन काल जु अर्द्ध समै, फिर तो भवकाननमें न भ्रमैं ॥ ११ ॥
यह दीनदयालपनो तुमरो, सु उचारि सकै मुख क्यूं हमरो ।
अरजी उर "थान" तनी धरिये, अब दीन निहारि दया करिये ॥१२॥
व्रत संयमभाव हिये धरिये, समतारस पूरि सुखी करिये ।
परिपावन ये हम जाचत हैं, तुमसेव सदा अभिलाषत हैं ॥ १३ ॥

देवराज छंद ।

हटै कुभावकी घटा सुज्ञानभानको प्रकाश होत है ।
हुवै समग्र सिद्ध काज उग्र पुण्यके समाज सो लहै ॥
दिवेश वेलिके समान अप्रमान सौख्यदान है यही ।
करै जिनेशकी सुभक्ति है त्रिदोषतें विमुक्त जो सही ॥१४॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्रायपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल छंद ।

सूरप्रभु जिन तनी सुखद जयमाल है ।

शुभ संचयकरतार अशुभको साल है ॥
धरैं ज्योति मनु परम कलानिधिकी कला ।
कुमुद ज्ञानविकसान तिमिरदुरमतिदला ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीसूरप्रभुजिनेंद्रपूजा समाप्ता ॥ ९ ॥

अथ श्रीविशालकीर्तिजिनपूजा ।

गजेन्द्रगति छन्द (नेउंसा)

है गिरपुंडरे जन्मपुरी सुपुरी सुरराजसमाने विख्याता ।
भूप विजेश पिता सवितादुति देन विजैं विजया वर माता ॥

---

१ पुंडरगिरि २ इन्द्रपुरी (स्वर्ग) के समान ३ सूर्यकी कांतिके समान ४ विजय देनेवाली ।

केतु लसै सुरईश्वर चिह्न विलोकत ह्वी उपजै मन साता ।
देव विशाल विशाल[३]दया करि तिष्ठ इतैं अब हे जगत्राता ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्त्तिजिनेंद्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्त्तिजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्त्तिजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथ अष्टक ।

गीता छंद ।

जल अमल[५] गंध सरोज[६]जुत तृटहार[७] भृंग[८] भरायकैं ।
प्रकटान शीतल सहज निज जिन चरन देहु चढायकैं ॥
पदनखर[९] जासु[१०] कलिंद[११] भव्यमलिंद[१२] मोचै[१३] रसाल[१४] है ।

१ ध्वजामें २ इन्द्र ३ बहुत दया करके ४ हे जगकी रक्षा करनेवाले ५ स्वच्छ ६ कमल सहित ७ प्यास हरने वाला ८ झारी ९ चरणोंके नख १० जिसके ११ तरुण-सूर्य १२ भव्यरूपी भ्रमरोंकेलिये १३ आनन्द तथा प्रफुलित करनेको १४ रंगीला तथा सुंदर ।

शुचि सुभगं समरसतालै सुगुनविशालं देव विशाल है ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

कश्मीर सुभग सुरंग संग पटीरं नीर घसायकैं।

तपभाव आकुल हरन श्रीपति चरन देहु चढायकैं ॥

पदनखर जास कलिंद भव्यमलिंद मोच रसाल हैं।

शुचि सुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

उज्ज्वल अखंडित गंध मंडित श्याम जीर सुहावने।

जल क्षाल अक्षत अखयपदहित यजूं जिनपद पावने ॥

पदनखर जास कलिंद भव्यमलिंद मोच रसाल है।

शुचि सुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ ३ ॥

---

१ पवित्र २ सुन्दर ३ समतारूपके पात्र ४ [illegible] ५ [illegible] ।

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

वरवरन सुभग सुगंध पूरित घ्राण दृग ललचावने ।

हम यजत लेय गुलाब आदिक सुमनवृन्द सुहावने ॥

पदनखर जास कलिंद भव्यमलिंद मोच रसाल है ।

शुचि सुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नैवेद्य षटरसपूर बलकर सद्य सुभग सुहावने ।

हम यजत जिन लहि चारु चरु सुरभोगसम मन भावने ॥

पदनखर जास कलिंद भव्यमलिंदमोच रसाल है ।

शुचि सुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

लसत जगमग जोति ललित उदोत दीप प्रजारिकैं ।

हम स्वपदगुन सुप्रकाशहित जिन चरन धरत उतारिकैं ॥
पदनखर जास कलिंद भव्यमलिंदमोच रसाल है।
शुचि सुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

वर धूप गंध अनेक मिश्रित वीतहोत्रविषें धरें।
मनु यजत जिनवर चरन भविके धूप मिस पातक टरें ॥
पदनखर जास कलिंद भव्यमलिंद मोच रसाल है।
शुचि शुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल पक्व मधुरे दाख दाडिम आम्रखारिक पावने।
लहि यजूं भवभय हरनको युग चरन मुनिमन भावने ॥

पदनखर जास कलिंद मठ्यमलिंद मोच रसाल है।
शुचि सुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ ८ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गंध अक्षत सुमन सुंदर चारु चरु रसपूरही।
धरि दीप धूप फलौघ करि यजि जगतपति सुखपूरही ॥
पदनखर जास कलिंद मठ्यमलिंद मोच रसाल है।
शुचि सुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ ९ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला।

(कवित्त छंद)

कीरति विशाल है विशाल वरभाल जास,
मोचन कलंक लसै लोचन विशाल है।

भवभय पीर हरो म्हारी, तोहि यजूंजी वरवीर । भवभय० ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

चोचक चारु निंबु नारंगी, दाडिम दाख सुहात ।
दृग मनहर फल धरि तब पायन, भविजन शिवफल पात ॥
भवभयपीर हरो म्हारी, तोहि यजूंजी वरवीर । भवभय० ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत मनमथसर नेवज नैन सुहात ।
दीप धूप फल अर्घ बनाकर पूजूं जिन हरषात ॥
भवभयपीर हरो म्हारी, तोहि यजूंजी वरवीर । भवभय० ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरप्रभुजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

———:o:———

भ्रमवसाय परकूं निज जान्यो, निजस्वरूप अपनो न पिछान्यो ।
विविध दुःख भवमें जु लहाये, नहि जु जात इकमुखतैं गाये ॥ ४ ॥
नरकभूमि भयदा अधिकाई, जुत प्रमाद हति जीवन पाई ।
डंक सहस विछुवा मिल मारे, परस पीर इतनी विसतारे ॥ ५ ॥
उसन शीत अतिचंड तहां है, गिरत मेरु सम लोह गला है ।
जनमथान अति ही भयदाई, सकल रोग बहु हैं दुचिताई ॥ ६ ॥
करत मार करुना नहि लावै, कलह रैन दिन तहां सुहावै ।
निमिषमात्र तिसमें सुख नांही, पचत दुःख दव अग्नि जु मांही ॥ ७ ॥
तलत तेल मधि पावक जारै, पकर पांच भुविमांहि पछारै ।
हनत हाड़ उर अंतरजाली, मरम भेद कर होत विहाली ॥ ८ ॥
धरि करोत लकरीवत चेरै, धारि यंत्रमधि तहां सु पेरै ।
तिलसमान सबही तन खंडे, मरनकाल विन प्रान न छंडै ॥ ९ ॥

सकल लोक अन जो भख लेवै, तदपि भूख नहि शांति जु देवै ।
सकल सिंधु जलपान जो ठानै, तनक नाहि तिनकी तिस भानै ॥१०॥
मिलत नाहि कन अन्न जहां है, जल न बूंदसम सो जु लहा है ।
अगनियोग कर ताम्र गलावे, मधु कुपान करके वह पावै ॥ ११ ॥
करत नीच पलभक्षन जो है, भखत जोझि तिनके तनकूं है ।
रुधिर राध स्रवती दुखदेनी, प्रबल क्षारयुत है सुखखैनी ॥ १२ ॥
करि जु लोहपुतरीजुत पावे, पर सुभामरतकूं लिपटावे ।
नेत्रानितें जु करत कुटिलाई, हरत तास दृग करि निठुराई ॥ १३ ॥
वदत बैन परकूं दुखदाई, करत तास रसना तिह ठांई ।
सकल दुःख समुदाय जहां है, ससनचाल विकराल तहां है ।
वन जु भीम शिखरी भयदाई, करत घाव असिपत्र तहां ही ।
नहिं समान कोऊ दुख तातें, कहन कौन मक काटमुखातें ॥ १५ ॥

लहत आयु तहँ सागरमानं, इम दुखौघ हम सहे अमानं ।
पशु कुयोनिमधि जो दुख पाये, प्रकट तोहि कछु नांहि दुराये ॥ १६॥
दरश हीन सुरहू दुख पावै, परविभूति लखिकै ललचावै ।
मुरझि माल जब जात अगारी, मरन जानि उपजे दुखभारी ॥ १७ ॥
चवत देखि वनिता दुख पावै, तनक नाहि वरन्यो वह जावै ।
मनुष योनि अतिपावन सोऊ, सुखित नाहि तिसहू मधि कोऊ ॥१८॥
वय जु बाल परकै वसि जानो, विविधरोग करि संयुत मानों ।
तरुन भोगवासि यौवनमांही, प्रबल आश वयमध्य तहांही ॥ १९ ॥
शुभवियोग दुखयोग लहावै, शिथिल अंग वयवृद्ध कहावै ।
विन पिछान अपनी मरि जावैं, थिर विना न थिरता कहुं पावैं ॥
तुम स्वरूप थिर हो थिरगामी, थिर सुथानकरता थिरनामी ।
थिर स्वभाव हमकूं दरसावो, दुखित जानि करुना उर ल्यावो ॥२१॥

शुभ संचयकरतार अशुभको साल है ॥
धरैं ज्योति मनु परम कलानिधिकी कला ।
कुमुद ज्ञानविकसान तिमिरदुरमतिदला ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीसूरप्रभुजिनेंद्रपूजा समाप्ता ॥ ९ ॥

अथ श्रीविशालकीर्तिजिनपूजा ।

गजेन्द्रगति छन्द (तेईसा)

है गिरपुंडर[1] जन्मपुरी सुपुरी सुरराजसमान[2] विख्याता ।
भूप विजेश पिता सविता[3]दुति दैन विजैं[4] विजया वर माता ॥

---

१ पुण्डरगिरि २ इंद्रनगरी (स्वर्ग) के समान ३ सूर्यकी कांतिके समान ४ विजय देनेवाली ।

अथ श्रीवज्रधरजिनपूजा ।

—:०:—

छप्पय छंद ।

करकि क्रूरधुनि पूरराग अहिमूर नशावन ।
भ्रमपहार चक्रचूर जोति अनुपम दरशावन ॥
विपतवक्र सर्वज्ञ वीच दुतिवक्र झुमकत ।
डरत सृष्टिपरभाव धरनि मिथ्यात्वधरकत ॥
इम वैन वज्रवर शस्त्रधर, जय जय जिनपति वज्रधर ।
करि कृपा दलतदुख दासके, तिष्ठ तिष्ठ इत देव कर ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

शुचि[1] सुभग[2] समरसताल[3] सुगुनविशाल[4] देव विशाल है ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

कश्मीर सुभग सुरंग संग पटीर[5] नीर घसायकैं ।

तपभाव आकुल हरन श्रीपति चरन देहु चढायकैं ॥

पदनखर जास कलिंद भव्यमलिंद मोच रसाल हैं ।

शुचि सुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

उज्ज्वल अखंडित गंध मंडित श्याम जीर सुहावने ।

जल क्षाल अक्षत अखयपदाहित यजूं जिनपद पावने ॥

पदनखर जास कलिंद भव्यमलिंद मोच रसाल है ।

शुचि सुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ ३ ॥

१ पवित्र २ सुन्दर ३ समतारसके ताल ४ अच्छे गुणोंकर सयुक्त ५ चंदन ।

पतिरैन फैन समान दुति अति ऐन जुत मनहारहै।
हित अखय पद पदतर धरें पर चाहि क्षुनक्षयकार है॥
दुतिकंज मंजु सुगंध धारेपद वज्रधर याजि शुभ सजें।
तिन कुलिशधर हरधर प्रभाधर चक्रधर गनधर यजें॥ ३॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

तृण द्रुमा सारस सेवती शुचि सोन जाय सुहावने।
सो हरन पनसर शरन सुमनसंमूह धरि मनभावने॥
दुति कंज मंजु सुगंध धरि पद वज्रधर याजि शुभसजें।
तिन कुलिशधर हलधर प्रभाधर चक्रधर गनधर यजें॥ ४॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

घृत शरकरायुत विविध व्यंजन शुभग सद्य सुहावने।
वरनवर क्षुतहर सुगंधित अग्र धरि मनभावने॥

हम स्वपदगुन सुप्रकाशहित जिन चरन धरत उतारिकैं ॥
पदनखर जास कलिंद भव्यमलिंदमोच रसाल है ।
शुचि सुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

वर धूप गंध अनेक मिश्रित वीतहोत्रविषैं[1] धरैं ।
मनु यजत जिनवर चरन भविके धूम मिस पातक टरैं ॥
पदनखर जास कलिंद भव्यमलिंद मोच रसाल है ।
शुचि शुभग समरसताल सुगुनविशाल देव विशाल है ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीविशालकीर्तिजिनेंद्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल पक्क मधुरे दाख दाडिम आम्रखारिक पावने ।
लहि यजूं भवभय हरनको युग चरन मुनिमन भावने ॥

१ अग्निमें ।

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

सुभग दोलिक अंब एला पूररस निंबुक भले ।
वररंग नारंगी सु आदिक लेयकैं फल मन रले ॥
दुतिकंज मंजु सुगंध धरि पद वज्रधर यजि शुभ सजें ।
तिन कुलिशधर हरधर प्रभाधर चक्रधर गनधर यजें ॥८॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जलगंध अक्षत सुमन चरु अरु दीप धूप फलौघही ।
इम अर्घकरि प्रभु अग्रधरते हरत हैं अघ औघही ॥
दुति कंज मंजु सुगंध धरि पद वज्रधर यजि शुभ सजें ।
तिन कुलिशधर हरधर प्रभाधर चक्रधर गनधर यजें ॥ ९॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला।

चंद्रावर्त छंद।

वज्रअस्थिनसकील जु सकलं, वज्र जेम तनकी दुति अमलं।
शीलवज्र गहि कं गिरिहरता, देव वज्रधर तू जगभरता ॥ १ ॥

मोतीदाम छंद।

अतत्त्वप्रतीत जु वज्र महान, विदारनकूं कनवज्र समान।
चये तुम कोमल बैन जगीश, गुहे तिनकूं गहिकै गन ईश ॥ २ ॥
कह्यो सब जीव अजीवस्वरूप, भने विधि बंधनकूं दश रूप।
मिले सब जीव रु कर्मसंयोग, बनैं तहँ बंध महा दुखयोग ॥ ३ ॥
जबैं रस देत उदै वह जानि, उपायबसैं सु उदीरण मानि।
रहै जबलौं वरनो सत तास, बढै थिति सो उतकर्षण भास ॥ ४ ॥
घटै थिति सो अपकर्षणरूप, हुवै जब संक्रमणं पररूप।

उदीरण ता विन है उपसम्म, उदीरण संक्रमणं सु जुगम्म ॥ ५ ॥
नहीं जहँ येह निधत्ति सु तेह, निकांचितमांहि नहीं चव येह ।
जहां उतकर्षणको न प्रसंग, कछू अपकर्षणको नाहि अंग ॥ ६ ॥
उदीरण संक्रमणं जुग नाहि, इन्हीं वसि जीव भ्रमै भवमांहि ।
सुचिंतन पावक वज्र प्रजारि, दशूंविधि बंध किये तुम छारि ॥ ७ ॥
छई निज जोति सबैं जगपूर, भये भविजीवनके दुख चूर ।
कह्यो दश धर्म सु जातिस्वभाव, मनूं भववारिधको वर नाव ॥ ८ ॥
लहैं तुम ध्यान किये निरवान, कहा विसमै इसमें भगवान ।
तपोधन तो गुनमें मन धार, करैं जग जंतु सुखी भय टार ॥ ९ ॥
पशूगन हू तुव नाम रटात, विवेकविना पदवी सुरपात ।
लखैं तुमरी छविकूं भरि नैन, कहैं महिमा तिनकी किम वैन ॥ १० ॥
अहो तुम जन्म भयो इह ठाम, लह्यो सुख नारक हू अघधाम ।

अगोचर अक्ष निजातमरूप, तुम्हें उर धार लखें मुनिभूप ॥ ११ ॥
मथें तुम वैन सुकोमलदारु, जगें कर जोरि कृशानु विचारु ।
जरैं घन मोहमहावन भूरि, लसै निजजोति सवैं जग पूरि ॥ १२ ॥
जयो तुम वैन करिंदसरूप, करै चिदचिंतन केलि अनूप ।
अनंतनयातम अंग विशाल, हिताहितवोध सु उन्नतभाल ॥ १३ ॥
सुग्राहक भाल लसे वरसुंड, फबैं सितदंत प्रमान अखंड ।
कृपाकरनीरत मत्त महान, झरै नयगंडनतैं पयदान ॥ १४ ॥
रही भँडि भव्य सिलीमुख भीर, घरै समतामय गोनस धीर ।
करे उपदेश सु गर्ज निषाद, उदे शुभ सुंदरघंट निनाद ॥ १५ ॥
अनातमभाव अनोकुहखांडि, दई भवसंमृतिवेल विहंडि ।
महामुदमंगलकूं प्रगटात, लखे मुनि भूपनिकूं ललचात ॥ १६ ॥
यहै वर वानिक सो सुखदैन, वसो हमरे उरमें दिनरैन ।

करो करुना करुनाजलसिंधु, सदा तुम दीननके वरबंधु ॥ १७ ॥
तुही पदपंकजको उरवास, रहो जबलों नहि बंधविनास ।
प्रतीति तुही वचकी वरदेव, रहै नित ही चरणांबुजसेव ॥ १८ ॥
मिलै सतसंगतिही सुखरास, हुवै जबलों शिव "थान" निवास ।
अहो जिन! जाचत हैं हम तोहि, अजाचकतापद दे अब मोहि ॥१९॥

शिखरिणी छंद ।

सुसीमाख्यं रम्यं जनमपुर शोभावरयुतं ।
पिता पूर्णं क्रांतिः पदमरथनामा क्षितिधरं ॥
प्रभारंभाहारी जननि जगत्राता सरस्वती ।
जयो कंबूकेतू प्रणतभयहा वज्रधर ! त्वम् ॥ २० ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवज्रधरजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

अडिल्लछंद ।

करत वज्रधर देव तनैं गुनगानकूं ।

ततछिन देत उडाय कुमतिके मानकूं ।।
करत सुगतिसंबंध बंधविधिकूं हरै ।
अमल अचल सुखपूर मुक्तिपदवी धरै ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीवज्रधरजिनपूजा समाप्ता ॥ ११ ॥

अथ चंद्राननजिनपूजा ।

कुसुमविचित्रा छंद ।

विधितमछायाविगत विराजै, दुरमतिकोकी उर दुखसाजे ।
जय जिन चंद्रानन जगचंदा, मम हित तिष्ठौ गुनगनवृंदा ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्र अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथ अष्टक ।

छंद चाल लावनी ।

शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरअविद्यानिशि निशिनायक हरहु
तपत मोरी । शरन मैं चंद्रानन तोरी शरन० ॥
हिम सम शीतल विमल सलिल शुचि, भरूं कनक झारी ।
धरूं धार तव चरनकमलतर, जनम मरनहारी ॥
शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरअविद्यानिशि निशिनायक०

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

घसि चंदन करपूर नीरसँग, तपत पीर हारी ।
पूजूं परम उछाह भाव धरि, तव पद त्रिपुरारी ॥
शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरअविद्यानिशिनिशिनायक०

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिंनद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अक्षत औघ अखंड श्वेत शुचि, सुंदर भरि थारी।
करूं पुंज तव चरन अग्र जिन, पद अक्षयकारी॥
शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरआविद्यानिशिनिशिनायक०
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

सुमन मनोहर विविधवरनके, वरसुगंधधारी।
हे शिवेश! तुह चरनन चोढूं, मदनपीरहारी॥
शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरआविद्यानिशि निशिनायक०
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

नेवज विविध नवल बलकारक, सुंदर मनहारी।
धरूं भेट तव चरन अग्र जिन, रुजक्षुतक्षयकारी।
शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरआविद्यानिशिनिशिनायक०
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

दीप रतनमय वा घृतपूरित, अतिदुति तमहारी।
करूं आरती करि अब मम उर, निजगुन उजियारी॥
शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरअविद्यानिशिनिशिनायक॰
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

करि कपूर अगरादिक चूरन, परिमल मलहारी।
धूप विषमविधिबंध दहनकूं, दहन मध्य जारी॥
शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरअविद्यानिशिनिशिनायक॰
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

रसपूरित रसनामनभावन, फल शुचि सुखकारी।
विधिफल विफलकरन भयभंजन, करूं भेट थारी॥
शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरअविद्यानिशिनिशिनायक॰
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

जल चंदन गंधाक्षत केसर, नेवज बलकारी।
दीप धूप फल मेलि अरघ करि, यजूं विघन टारी।
शरन मैं चंद्रानन तोरी, तिमिरअविद्यानिशिनिशिनाय रु०
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा। ॥ ९ ॥

अथ जयमाला।

दोहा।

विमलभाव षोडश कला, पूरित अतिदुतिवंत।
वचनसुधासीकरानिकर, भविगन अमर करंत ॥ १ ॥

चौपाई १६ मात्रा।

भरमभाव वय बाल मिताई, निजरसभास तरुनता छाई।
शोभा सरस अंग वसु बाढी, रची प्रीति शिवातियतैं गाढी ॥ २ ॥
मज्जन मल परभाव उतारे, केश सघनरुचि रुचिर सँवारे।

सम्यकदरश मुकुट सिर छाजै, उद्यम भाल तिलक वर राजै ॥ ३ ॥
वंधुर वसन दशूं दिश राजै, दश वृषभेश मुद्रिका छाजै ।
शक्ति विकाश इत्तर महकावै, द्विविध धर्म कुंडल दरसावै ॥ ४ ॥
नययुग लसत पादुका दोऊ, ध्यान कृपान चंड अरिखोऊ ।
सुभग शील पटका छवि छाजै, भेदबुद्धि असितनुजा राजै ॥ ५ ॥
वरविद्यायुत श्रीमुख सोहै, रचित तमोलराग वृष जो है ।
वस्तु दिखान सत्यमुख बानी, निज हित चतुर सकल सुखदानी ॥
इम षोडश शृंगार सँवारे, वर विराग केयूर सु धारे ।
दृढ प्रतीति भुजबंधन राजै, सुमन सुमनमाला उर छाजै ॥ ७ ॥
सो वर मुक्तिरमनिका झूला, गुप्तितीन कटिसूत्र सु मूला ।
चर्या चरनाभरण विराजै, सरलसुभाव छरी कर छाजै ॥ ८ ॥
तुर्रा वर विवेक झलकावै, सुमति सेहुरा सब मन भावै ।

मन मतंग असवार सुराजे, प्रभुता छत्र परम छवि छाजे ॥ ९ ॥
चामर द्विविध दयामित सोहे, अतुल तेज त्रिभुवन मन मोहे ।
अनहद ध्वनि दुंदुभि घररावे, अनुभव वर निशान फहरावे ॥ १० ॥
व्रत बरात सँग है रंग भीनी, नृत्य करत निति ऋद्धिनवीनी ।
अतिशयभाव असम दरसावे, विविधभांति भविमन ललचावे ॥ ११ ॥
इम समाजसंयुत जगभूपा, राजत है मुद मंगलरूपा ।
शिवश्यामा वर वरगुनधारी, निजबल प्रबल सकल खलहारी ॥१२॥
पद उर धरत करत अघहानी, निजविभूतिदाता वर दानी ।
सुगुन रटत कोउ पार न पावे, रटत रटत तुम सम ह्वै जावे ॥ १३ ॥
गाहि गाहि गुणसिंधु निहारो, गणपति ज्ञान लह्यो नहिं पारो ।
तो कहि पार कौन कवि पावे, निजभव सफल हेत गुन गावे ॥१४॥
करि कृपाल वरकृपा तिहारी, हरहु पीर ! भवपीर हमारी ।

"थान" शरन तोरी शिवनाथा, ताजि विलंब करिहो शिवसाथा।१५।

कुंडलिया छंद।

राजै नगरी पावनी, पुंडरीकणी जास।
बालमीकि भूपति पिता, सुंदर दयानिवास॥
सुंदर दयानिवास दयावति माता सोहै।
वृषभचिह्न ध्वजमाहि देखि सुर नर मन मोहै॥
जास चरनयुग सेय सौख्य भविगनकूं साजै।
सो चन्द्राननदेव ताप भवभंजन राजै॥ १६॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्राननजिनेंद्राय जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

अडिल्ल छंद।

चंद्राननके चरनसरोजनकूं यजै।
सजै सकलसुख आज दुःखगन सब भजै॥

रसना पावन भई करत गुनगानकूं ।
मिल्यो परमशिवथान आज मनुं "थान" कूं ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीचंद्राननजिनेंद्रपूजा समाप्ता ॥ १२ ॥

——:०:——

अथ श्रीचंद्रबाहुजिनपूजा ।

——:०:——

प्रवरललिता छन्द ।

चकोरं भव्यौघं दृगनसुखदा ध्वांतहारी ।
अगम्यं राहो त्वं वचरसयुतं मृत्युहर्ता ॥
कमोदं स्वबोधं विकासितकरं पूर्णकांतिः ।
इतै तिष्ठौ तिष्ठौ जनतमपहा चंद्रबाहु ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथ अष्टक ।

छंद चाल ठुमरी ।

मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो । टेर ॥
प्रासुक नीर पीर तृटभंजन, जनमनरंजन मैं ल्यायो ।
देन विषमभवरोग जलांजलि, तव पद पूजन उमगायो ॥
मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्रबाहुजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

सुभग पटीर घासि जलके संग, कुंकुम मिश्रित महकायो ।
व्याधि प्रबल आकुल कुल बारन, चरन चढावत हरषायो ॥

मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्रवाहुजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

दुति मृगांक हिम जलज फेन सम, उज्ज्वल अक्षत मैं ल्यायो ।
करि पावन वसुमी क्षिति पावन, चरन चढावन हरषायो ॥
मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्रवाहुजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

मदन बाण तृण द्रुमा सेवती, वर गुलाब दृग मन भायो ।
झकध्वजकील शील श्रीदायक, तव पद पंकज ढिग ल्यायो ॥
मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्रवाहुजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

पूपक पाक मनोहर घेवर मोदन-मन मोदक ल्यायो ।
खोवन क्षुत तरुमूल कुफलदा, तव पदतरि धर हरषायो ॥

मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्रबाहुजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीप कपूर पूरकैं घृततें, ललितज्योति तमहर ल्यायो ।
कुमति कुहर हरिये मम उरको, करूं आरती हरषायो ॥
मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्रबाहुजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

शुचि चंदन वर कदलीनंदन, अगरादिक चूरन ल्यायो ।
धरि पावक वसु कर्म प्रजारन, हरपि हरपि तुव गुन गायो ॥
मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्रबाहुजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

करना कैथ जमेरी दाडिम, अंबक आदिक फल ल्यायो ।
शिवफल पावनकूं जगपावन, तोहि जजूं मैं हरपायो ॥

मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्रबाहुजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत अनियारे, कुसुम सुगंधित चरु ल्यायो ।
दीप धूप फल लेकरि, पावन अर्घ चढ़ाहूं उमगायो ॥
मेटो मेरी पीर जिनंदजी, तोरी मैं शरना आयो ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्रबाहुजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

हंस मंत मन मानसर, भवदुखकंज तुषार ।
सुखसमुद्रवर्धन विधू, चंद्रबाहु जयकार ॥ १० ॥

दीपकला छंद ।

यह जगत जलधि ताको न तीर, षट द्रव्य शक्ति सत्ता सुनीर ।

व्यय उत्पति ध्रौव्य तरंग जास, भरपूर भर्यो नहिं आदि तास ॥२॥
शुभ द्वीप बसै सुख रत्नपूर, दुरगति दुख जलचर बसत कूर ।
बडवानल मोह महाप्रचंड, विधि उदय मौज उछलै अखंड ॥ ३ ॥
चाढिकैं परपरणति पोत भूरि, मद मत्सर तम तस्कर करूर ।
विचरैं दुरलालचके निकेत, धन संतनके गुन हतनहेत ॥ ४ ॥
इहको नहि थाह कहूं जिनेश, तुम ज्ञानविषैं झलकैं अशेष ।
निजगुन मुकताफल गहनहार, भविजीव रचैं ऐसो प्रचार ॥ ५ ॥
जिनवचनप्रतीति जिहाज सार, सत गुरु शुभमग दरसानहार ।
ऐसें करिकैं जु करैं प्रवेश, या विध फुनि श्रम ठानैं सुवेश ॥ ६ ॥
वैराग्यदशाभाजन मझार, बैठें दुरमति सब कर उघार ।
दृढ सांकल सुरति सु जोरि तास, राखैं निजथान लगाय जास ॥७॥
जग आशा तजिकैं ह्वै निशंक, जगदीश्वरके ध्यावैं चिदंक ।

ऐसे स्वरूपजलमें अपार, खोजैं अपने गुन बार बार ॥ ८ ॥
दिशि और धरै रंचक न ध्यान, तब पावत हैं अक्षय निधान ।
जिन सो निज निज सो जिनस्वरूप, करकैं प्रीति है जगतभूप ॥९॥
वर भक्ति तिहारीतें जिनंद, प्रकटै सुख नानाविध अमंद ।
इम मुनिजन मिल निहचै सुकीन, तुम ध्यानविषै नित होत लीन ॥
तें पावत हैं शुचि शक्ति सार, सो सुरपति हूमैं ना लगार ।
तुम धन्य जगोत्तम देवदेव, नित करत पाकशासन सुसेव ॥ ११ ॥
वसु द्रव्य चढावत धरि उमंग, फुनि नाचत राचत भक्तिरंग ।
विरयां समान रचि सब सुठाट, करि तन छिनलघुछिनमें विराट ॥
सजि स्वांग त्रिविध विधिके अनूप, सरसात नवूं रस देवभूप ।
वर भूषण भूषित लसत अंग, मनु भूषणांग सुरतरु चलंग ॥ १३ ॥
धुनि भूषण मुख वादित्र भूरि, मिलि एकसनाको सुरहि पूर ।

सम सुर तिताल त्रय ग्राम धारि, लय ललित तरल तानैं अपार ॥१४॥
ततता ततता वितता भनंत, थेईता थेईता थेईता चलंत ।
छुम छुम छुम घुंघरू घमक चंग, द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम बाजत मृदंग ॥१५॥
सननननन सारंगी उचार, तुं तुं तननं तननं सितार ।
तं तनन तनन मुहचंग चंग, झननननन झुनकै जलतरंग ॥ १६ ॥
टम टम टम टम टंकार पूरि, मंजीर बजै सुरतैं सनूरि ।
करतार झरर झररर झुनंत, समपै सब आवत एकतंत ॥ १७ ॥
छिनमैं जुगबाहुनकूं पसार, सोहै चल करपल्लव अपार ।
इक कर कटि धरि करि ग्रीव बंक, इक कर शिर धरि नाचै त्रिवंक ॥१८॥
मुकुटाकृति द्वैकर शीस धार, रतनांगणमैं विचरै अपार ।
झट झट झट अनहद होत पूर, इह झुरमट राजै जिन हजूर ॥ १९ ॥
फिर फिर फिर फिर फिरकी सुखात, पग नूपुर झुननन झुननात ।

शिर शेखर रत्नप्रभा सु सार, चक्राकृति है झलकै अपार ॥ २० ॥
मकराकृत कुंडल झुलत कान, विजलीसम सोहत चल महान ।
छिन भूपरि छिन नभमैं लसंत, परसैं शशि उडु अवनी महंत ॥ २१ ॥
छिनमें इक है छिनमें अनेक, दरशात विबुधपति विविध भेक ।
सुर नर मुनि मनरंजन विधान, ताको कवि कौन करै बखान ॥२२॥
हरि उरसरपूरित भक्ति नीर, तव दरशन मनु परसी समीर ।
इह लीला ललित तरंगरूप, तन मन पावन कारन अनूप ॥ २३ ॥
मैं मो मन पावन करन हेत, उचरी मुख सुंदर सुख निकेत ।
अब "थान" यही जाचै जिनंद, तव भक्ति बसो उरमें अमंद ॥२४॥

कुंडलिया छंद।

देवानंद पिता सुखद, मात रेणुका जास ।
लसै पद्म लच्छन धुजा, नगर विनीता तास ॥

नगर विनीता तासं जन्मतैं ही अतिपावन ।
भविजनवृंदचकोर लोललोचन ललचावन ॥
सदा उदित मुखचंद करूं ताकी नित सेवा ।
चंद्रबाहु जयवंत सकल देवनके देवा ॥ २५ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीचंद्रबाहुजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल छंद ।

जयमाला जयदाय चंद्रबाहू तनी ।
जो उचरै धर भक्ति छारि मनकी मनी ॥
घनी कहा यह बात कष्ट टरि जानकी ।
जन्म मरन मिटि होत अचलता ज्ञानकी ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीचंद्रबाहुजिनपूजा समाप्ता ॥ १२ ॥

अथ श्रीभुजंगमजिनपूजा ।

—o:—

छप्पय छंद ।

ललनमुक्तिगुनराग सुनत अनुराग प्रबल भर ।
तजि बंबी मिथ्यात तेज लोचन प्रमान कर ॥
हरि कंचुकी विभाव लसत तन सुगन प्रभावर ।
अनेकांत फन प्रबल प्रचुर फुंकार ध्वनीधर ॥
जिह्वा अनंत नय भेद लखि दादुर कुमत भजंत डर ।
जय जिन भुजंगम तिज्ञानधर तिष्ठ तिष्ठ इत देववर ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमपरमदेव ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमपरमदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमपरमदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट् ।

अथ अष्टक।

छंद चाल राग परज तथा विहाग।

लेय सलिल शीतल शुचि सुन्दर, मिष्ट मनूं मधुरूप।
भरि भृंगार धार त्रय धारूं, हरि भवदुख जगभूप॥
मैं तो जिन! पद थारा पूजूं शिव उरहार अनूप॥ १॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

घसि पटीर पावन जलके संग, युत केसर वररूप।
गंध अनूप बंध भव मोचन, अग्र धरूं सुखकूप॥
मैं तो जिन! पद थारा पूजूं शिव उरहार अनूप॥ २॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

अक्षत औघ अखंड अनीयुत, मुकतासम शुचिरूप।
पुंज करूं अक्षय क्षिति पावन, तव पदतर जगभूप॥

मैं तो जिन ! पदथारा पूजूं शिव उर हार अनूप ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सोन जुंही वकुलादिक सुंदर, सुमन समूह अनूप ।
पूरित गंध धरूं तव पदतर, हरि मनमथ दुखकूप ॥
मैं तो जिन ! पदथारा पूजूं शिव उर हार अनूप ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

घेवर पाक विविधरस भीने, नेवज नवल अनूप ।
क्षुत परवाह दाहवेकूं अब, भेट करूं जगभूप ॥
मैं तो जिन ! पद थारा पूजूं शिव उरहार अनूप ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

ज्वलित कपूर नेह घृत पूरित, दीपक जोति अनूप ।
आरति हरन आरती तेरी, करूं लखन निजरूप ॥

मैं तो जिन ! पद थारा पूजूं शिव उरहार अनूप ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेंद्राय दीप निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

चूरन गंध भरा अगरादिक, अलिगनरंजनरूप ।

खेऊं वसुविध बंध प्रजारन, तुम पद ढिग जगभूप ॥

मैं तो जिन ! पद थारा पूजूं शिव उर हार अनूप ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेंद्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

बीजपूर बादाम छुहारे, चोचक अंब अनूप ।

ये फलपुंज परमफल पावन, भेट धरूं जगभूप ॥

मैं तो जिन ! पद थारा पूजूं शिव उरहार अनूप ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन गंधाक्षत सुंदर, सुमनसमूह अनूप ।

नेवज दीप धूप फल लेकरि, अर्घ धरूं जगभूप ॥

मैं तो जिन ! पद थारा पूजूं शिव उरहार अनूप ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

जगत भ्रमन हरि अशनकरि, प्रकटकालके काल ।
लसत ज्ञानमनितैं अमल, जिन भुजंग वरभाल ॥ १ ॥

चाल रेखता छन्द ।

सुनो अरजी अबै मोरी, हुआ गरजी निहोरूं मैं । टेर ॥
चिदानंद मैं अनादी हूं, नहीं कुछ आदि है मोरी ।
सिवा अपनी चतुष्टयके, नहीं परवस्तु मेरेमैं ॥ सुनो० ॥ १ ॥
असल मालुम न थी मुझको, अबै गुरुबैनतैं जानी ।
किये जडकर्मकूं संगी, परी ये भूल मेरेमैं ॥ सुनो० ॥ २ ॥

लगा इनकी मुहब्वतमें, लुटाया ज्ञानधन मैने ।
अहो उपकार ऐ साहिब !, किये इनपैं घनेरे मैं ॥ सुनो० ॥ ३ ॥
विहीनेज्ञान जड ये हैं, नहीं चैतन्यता इनमें ।
कृतघ्नी होयकैं मोकूं, भ्रमाया गाचि च्यारूं मैं ॥ सुनो० ॥ ४ ॥
अगोचर बैन विन उपमा, सहे दुख नर्क दारुन मैं ।
जहां पल एक कल नांहीं, कहा मुखतें उचारूं मैं ॥ सुनो० ॥५॥
निगोदी मोहिकूं कीना, दुराया ज्ञानकूं ऐसा ।
रहा इक वर्ण व्यंजनके, अनंते भाग मेरेमैं ॥ सुनो० ॥ ६ ॥
उसास निश्वास इकमांही, किये मैं क्षुद्र भव ऐसे ।
अठारे बार हे साहिब ! अहो जनम्या मरा हूं मैं ॥ सुनो० ॥ ७ ॥
पशू परजाय जो पाई, सहायी को नहीं तामैं ।
नहीं धन धामसामाको, नहीं वच आस्य मेरे मैं ॥ सुनो० ॥८॥

क्षुधा रुज चंड है जामैं, तृषा अतिही भयंकर है।
मिलै तृण अन्न जल मुश्किल, लिखा जब भाग मेरेमैं ॥ सुनो० ॥
कही जाती नहीं मुखतैं, हुई जो व्याधि तनमांहीं।
सही को कौनविध जानै, सही मनही जु मेरेमैं ॥ सुनो० ॥ १० ॥
लदा बोझा बडा भारी, दई मारैं मरमभेदी।
नहीं ताकत मजल दूरी, पडी मुश्किल जु मेरेमैं ॥ सुनो० ॥ ११ ॥
सही हिम घाम घन बाधा, कही क्यों हूं नहीं जाती।
मरा जल ज्वालके मांहीं, सु जाहिर ज्ञान तेरेमैं ॥ सुनो० ॥ १२ ॥
कसाईनें गहा करमें, नहीं उरमें दया जाके।
करी है त्रास देदेकैं, जुदाई प्राण मेरेमैं ॥ सुनो० ॥ १३ ॥
कभी पैदा हुआ बनमें, बडा डर क्रूरजीवोंका।
जहां रहना उसी थलमें, सदा डरता रहा हूं मैं ॥ सुनो० ॥ १४ ॥

कभी जलमें जनम पाया, मुझे खाया जबरदस्तों ।
निबल मुझसे निगह आया, गया वो पेट मेरेमैं ॥ सुनो० ॥१५॥
हुआ पक्षी उडा नभमें, रहा डरता शिकारिनसे ।
सहायी को नहीं हूवा, गिरा जब फंद उसकेमें ॥ सुनो० ॥१६॥
कभी नरजन्म भी पाया, तहां रागादि बहु व्यापे ।
सही बाधा वियोगादिक, कहूं कबलों घनेरी मैं ॥ सुनो० ॥१७॥
विभव परकी निरख झूरा, लखी जब माल मुरझानी ।
लहे दुख देव ह्वै ऐसे, बसैं मनही जु मेरेमैं ॥ सुनो० ॥ १८ ॥
लही लख योनि चौरासी, अनंती वेर गहि छांडी ।
भ्रमन तिहुं लोकमें कीना, भई थिरता न मेरे मैं ॥ सुनो० ॥१९॥
जिते दुख हैं जगतमाही, बचे कोऊ नहीं मोतें ।
इन्हीं वसि भूलिकैं भोगे, खता कुछ नाहिं मेरे मैं ॥ सुनो० ॥२०॥

तु ही हाकिम गवा तू ही, तु ही लिखिया खुलासे कर।
खलासी कीजिये इनतैं, रहैं फिर नांहि मेरे मैं ॥ सुनो० ॥२१॥
दयासिंधू कहावै तो, दया मो दीन पै कीजै।
दिखा निजरूपकी झांकी, चहूं क्या और तुझसे मैं ॥ सुनो० ॥
लहूं अनुभूति मैं मेरी, रहूं निजधाममें सुखसे।
चहै ये "थान' भव भवमें, यजूं पदकंज तेरे मैं ॥ सुनो० ॥२३॥

शार्दूलविक्रीडित छन्द।

संयुक्तं सुबलं महाबल पिता, नग्री जया जन्मभू,
सीमा रूपसुबुद्धि मात महिमा, चिह्नं सुचंद्रान्वितं ॥
संसंतानंदपूर भूरि सुखदं, दूरीकृतं दुर्दुखं,
लोकालोकविलोक शोकदलनं देवं भुजंगं नमः ॥ २४ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीभुजंगमजिनेन्द्रेभ्यो जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २४ ॥

अडिल्ल छंद।

जिन भुजंग थुति करत दुरित सबही डरै।
ध्यान द्वार उर धरत कर्म दादुर डरै॥
टरै सकल भवपीर भीर परगुन तनी।
होत सिद्ध सब काज ऋद्धि अतुलित घनी॥ १॥

इत्याशीर्वादः।

इति श्रीभुजंगमजिनपूजा समाप्ता॥ १४॥

अथ श्रीईश्वरजिनपूजा।

छप्पय छन्द।

सुवृष वृषभ आरूढ झुंड भव झलक रुंड शृग।
जटाजूट निजभाव ध्यान पन्नग भूषण लग॥

गिरा गंग उछलंत त्रिगुन तिरशूल तेजकर ।
विशदज्ञानसंयुक्त विश्वभासक त्रिनयनधर ॥
चवविध सु घाति भस्मी सु तन, भाल चंद्र चिदगुन झलक ।
शुचि समवसरन कैलासथल, रहे निवास ईश्वर अलख ॥ १ ॥

दोहा ।

किये घातिविध विष अशन, पिये स्वानुभवभंग ।
अनहत ध्वनि डमरू डमक, शिव गिरिजा अरधंग ॥ २ ॥
तम अघभर रविकरनिकर, ईश्वर अलख अभेव ।
करि करुना करुणारणव, तिष्ठ तिष्ठ इत देव ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्र अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथ अष्टक ।

रुचिरा छंद ।

सम सुर भोग मनोज्ञ महाजल, शशिकरसम दुति धारी ।
प्रासुक परम पीरतृटभंजन, निजमनमज्जन भरि झारी ॥
वरमतिवरद विरदभयभंजन, रमन उमा शिव त्रिपुरारी ।
पावनपातित चरन तव ईश्वर, यजूं भ्रमनभवश्रमहारी ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

युत अहिगन वन भूरुहवासित, त्रासिततप अति है सीरा ।
घासि युतजलचंदन अलिगन, रंजनगंजन आकुलकुल पीरा ॥
वरमतिवरद, विरदभयभंजन, रमनउमा शिव त्रिपुरारी ।
पावनपातित चरन तव ईश्वर, यजूं भ्रमनभवश्रमहारी ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

सम पयफेन विशद अतिपावन, मुकताफल मनुआनियारे ।
पूरितगंध घ्राणदृगरंजन, भंजन क्षुत अक्षत धारे ॥
वरमति वरद विरदभयभंजन, रमनउमा शिव त्रिपुरारी ।
पावनपतित चरन तव ईश्वर, यजूं भ्रमनभवश्रमहारी ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुमनसमूह विविधविधि पावन, वरणविचित्रित गंधभरे ।
नाशन बाण मनोभव मनहर, सुखकर शीतल भेट धरे ॥
वरमति वरद विरद भयभंजन, रमनउमा शिव त्रिपुरारी ।
पावनपतित चरन तव ईश्वर, यजूं भ्रमनभव श्रमहारी ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नव नैवेद्य सुरस रसपूरन, चूरन क्षुत शुचि बलकारी ।
चंद्रकला वर घेवर वावर, फीणी मोदक भरि थारी ॥

वरमति वरद विरद भयभंजन, रमनउमा शिव त्रिपुरारी ।
पावनपतित चरन तव ईश्वर, यजूं भ्रमनभवश्रमहारी ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

चिद्‌गुन अमित रोकि इह राजत, मोहमहातमव्रज भारी ।
कर तिहिं नाश प्रकाश सुगुनकर, दीप चढाऊं तमहारी ॥
वरमति वरद विरद भयभंजन, रमनउमा शिव त्रिपुरारी ।
पावनपतित चरन तव ईश्वर, यजूं भ्रमनभवश्रमहारी ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर पटीरादिक वर चूरन, धूप धनंजय संग धरूं ।
जारन बंध करा दुरभावन, श्रीपति पांय प्रनाम करूं ॥
वरमति वरद विरद भयभंजन, रमनउमा शिव त्रिपुरारी ।
पावनपतित चरन तव ईश्वर, यजूं भ्रमनभवश्रमहारी ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥.

फल रसपूर विविधविधि पावन नारंगादिक थाल भरूं।
शिवफलहेत यजूं भवभंजन, तव पद कंजन भेट धरूं॥
वरमति वरद विरद भयभंजन, रमनउमा शिव त्रिपुरारी।
पावनपातित चरन तव ईश्वर, यजूं भ्रमनभवश्रमहारी ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गंधाक्षत सुमन मनोहर, नेवज नवल सु थाल भरूं।
दीप धूप फलपुंज सुहावन, ले वसुद्रव्य सु अर्घ करूं॥
वरमतिवरदविरद भयभंजन, रमनउमा शिव त्रिपुरारी॥
पावनपातित चरन तव ईश्वर, यजूं भ्रमनभवश्रमहारी ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

शंकर शं करि सकलके, हरि विकलपगन भूरि ।
पूरि पूरि उर सर सुरस, चूरि चूरि दुखचूरि ॥ १ ॥

दीपकला छंद ।

जय ईश्वर देव कृपानिधान, चितकोकशोकदल दिनसमान ।
भविवृंदकोकनदकूं कलिंद, शिवबधूवदनपंकजमलिंद ॥ २ ॥
साजि ध्यान जुगल भुजबल अखंड, जय मल्ल मोह जीत्यो प्रचंड ।
तुम जय जय जय जगजलधिसेतु, निरमद कीनो रिपु मकरकेतु ॥ ३ ॥
तुम नाममंत्रमाहिमा अपार, अघघनवन जारनकूं तुषार ।
ताके प्रभाव विष नशत भूर, नहि डंक सकै विषधर करूर ॥ ४ ॥
मृगपति पद चाटत है सपेम, मदपूरित कुंजर शिष्य जेम ।

थलसम जल जलसम अगनि होत, दुरजन उर सज्जनपन उदोत ॥५॥
नृप कुपित कृपा ठानैं अपार, रुजवृंद सकल नाशै असार ।
इक छिनमें दुख दारिद्र खोत, सब शोक नशै आनंद होत ॥ ६ ॥
कहुं डायनि सायनि भूत प्रेत, भय कर न सकै दुरमतिनिकेत ।
सुत पंडित सुभग सुशील वाम, याचें किंकर वरसुमतिधाम ॥ ७ ॥
जिहतें यश वरनत नाकईश, वृषप्रीतिभाव वरतें मुनीश ।
यातें महिमा कछु नांहि जास, जिहतें प्रगटै चिदगुनप्रकाश ॥ ८ ॥
उच्चरैं छिन अंतसमै सुजास, नर पामर पावत नाकवास ।
वरमाल धरै उर मुक्तिवाल, सहजानँद सुख उपजै विशाल ॥ ९ ॥
दुरजय विधिबंधन होत दूरि, दुख जनम मरन व्यापै न भूरि ।
इक जनम अलप सुखके प्रकाश, सुरतरु चिंतामणिसम न जास ।१०।
यह अशमशक्ति महिमा निधान, नहि वरनसकै धरि च्यार ज्ञान ।

ये जगतशिरोमणि मंत्रराज, दुरगतिदुखभंजनकौं इलाज ॥ ११ ॥
जबलौं स्वतंत्र होवै न जीव, ये मंत्र बसो उरमें सदीव ।
अरजी येही अवधारि देव, भव भव दीजे तव चरन सेव ॥ १२ ॥
गुनगान सुधारसमें किलोल, मनमच्छ करन चाहै अडोल ।
मति होहु अश्रन्याभाव अंस, निवरो अज्ञान दुरभाववंस ॥ १३ ॥
भव भव सज्जनजनको सुसंग, निजचिंतभाव वरतो अभंग ।
वर देहु यहै करुनानिधान, कर जोरि जुगल जाचै सु "थान" । १४ ।
मेरी करनी पर मति निहारि, निज प्रणतपालपनकूं विचार ।
करतें कर गहि लखि दीन मोहि, करनो विलंब छाजै न तोहि । ५ ।

सुरस छंद ।

नृप गलिसेन तात अरु माता, ज्वाला सुजसस्रमही ।
नगर सुसीमा जास जनमहित, स्वर्गसमान भई ॥

जीतैं मोह सूर्यलच्छनकी, जयध्वज फहर रही।
ता ईश्वरकी जयमाला यह, जयदा होहु सही॥ १६॥

दोहा।

जिन ईश्वरकी थुति यही, उचरत शुद्ध सुभाय।
प्रकटै सहजानंद सुख, सकल विघ्न टरिजाय॥ १७॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीईश्वरजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १७॥

अडिल्ल छंद।

जिन ईश्वर पदकंज सरस मन भावने।
जो पूजे मनलाय सौख्य सरसावने॥
कामधेनु समता प्रकटै उर जासके।
तृष्णा डायन वीर लगै नहि तासकै॥ १॥

इत्याशीर्वादः।

इति श्रीईश्वरजिनपूजा समाप्ता॥ १५॥

अथ श्रीनेमिप्रभुजिनपूजा ।

अडिल्ल छंद ।

त्वं निस्पृह निकलंक अंक चिद चारु हो ।
मंडित अतुल विभूति सुशक्ति अपार हो ॥
मैं आह्वानन करूं स्वहित चित ल्यायकै ।
भो करुनाकर नेमि ! तिष्ठ इत आयकै ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथ अष्टक ।

मदनमोहन छंद ।

सित सुंदर प्रासुक नीर, हिम तृट दाहहरा ।

मैं जनममरन भय भीरु, धारूं धार धरा ॥
वृषस्यंदन[1]–सुंदर-नेमि, शिवतिय प्रेम पगे,
वर नेम धरैं जिन नेमि, यजत कलंक भगे ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

वर मलयज म्हैकन मंजु, कुंकुम संग घसैं।
सरसत सुख आलि छकि गंध, परसत ताप कसैं ॥
वृष स्यंदन सुंदर नेमि, शिवतिय प्रेम पगे।
वर नेम धरैं जिन नेमि, यजत कलंक भगे ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अक्षतगन मनु कनहीर, सितपयफेनसमं।
शुचि मंडितगंध अखंड, रुजक्षयकूरदमं ॥
वृषस्यंदन सुंदर नेमि, शिवातियप्रेम पगे।

1 धर्मरूपी रथकी सुंदर धुरा।

वर नेम धरें जिन नेमि यजत कलंक भगे ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुभ सुंदर शुचि सुकुमार, सुमन सुगंध भरे।
लहि केतकि कंज गुलाब, सेवति आदि खरे॥
वृषस्यंदन सुन्दर नेमि, शिवातियप्रेम पगे।
वर नेमि धरें जिन नेमि यजत कलंक भगे ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

रसयुत रसनाललचान, मोदक मनहारी।
वर घेवर चन्द्रकलादि, व्यंजन भरि थारी॥
वृषस्यंदन सुन्दर नेमि, शिवातियप्रेम पगे।
वर नेम धरे जिन नेमि यजत कलंक भगे ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

तमभंजन दीपक ज्योति, उपमा फबत असें ।
ये जारत मनु अघपुंज, है मिस धूम नसें ॥
वृषस्यंदन सुदंर नेमि, शिवातियप्रेम पगे ।
वर नेम धरें जिन नेमि यजत कलंक भगे ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

वर चूरन पूरनगंध, पावक संग धरें ।
मिस धूम मनूं मन मैल, नभ मग गौन करें ॥
वृषस्यंदन सुन्दर नेमि, शिवातियप्रेम पगे ।
वर नेम धरे जिन नेमि, यजत कलंक भगे ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल दाडिम दाख विदाम, एला लौंग भले ।
रसपूरित रम्य रसाल, खारिक स्वाद रले ॥

वृषस्यंदन सुन्दर नेमि शिवातियप्रेम पगे ।
वर नेम धरें जिन नेमि यजत कलंक भगे ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत श्वेत, सुमनसमूह रले ।
चरु दीपक धूप फलौघ, भरि करि थाल भले ॥
वृषस्यंदन सुन्दर नेमि, शिवातियप्रेम पगे ।
वर नेम धरें जिन नेमि, यजत कलंक भगे ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

जसु वच विमल कृशानुझल, दुरनय वचन पतंग ।
गिरत विसन निज विजयहित, होत आप ही भंग ॥ १ ॥

कृपासदन मदमदनदल, विधि खल बल क्षयकार ।
नमूं नेमिपदकमलयुग, अशरन शरन अधार ॥ २ ॥

तारकवरन छंद ।

तुम तो प्रभु नेम त्रिलोकधनी हो, तुमरी महिमा नहि जात भनी हो ।
इकही गुन ज्ञान अमान अनै सो, वरन्यो न जहै जिम है तिम तैसो ॥
षट द्रव्य असंख्य अनंत प्रमाने, नहिं अंत अनादिहितैं तिथि ठाने ।
सबही गुण औध अनंत सुधारैं, गुण हू पर्याय अनंत विथारैं ॥ ४ ॥
सु बहै गत वर्तत आगत जे हैं, झलकैं तुमरे निजभाव विषै हैं ।
तुमरो उर ध्यान सुभान प्रकाश्यो, भ्रमभावविभावरिको तम नाश्यो ॥
विकसी शुभ आस्रव राजिवराजी, उडुवृंद दुरास्रव ज्योति न साजी ।
चकवी सदबुद्धि हिये हुलसाई, उलवा अविवेक न देत दिखाई ॥

१ रात्रिका ।

भवसंसृति बेलि भई कुमलानी, वर भाँति पदारथ पाँति पिछानी ।
कुनया व्यभिचारनि जेम दुरी है, गति मोहनिशाचरकी न फुरी है ॥
सुसुधारस प्यास प्रचंड बधाई, प्रगटी व्रत भोजनकी सु क्षुधा ही ।
वट मार महाभट मार पिरानो, तटिनी तृसना जल जात सुखानो ॥
मद भाव महीधरसे अकुलाने, व्यवसाय गए गुनलाभ अमाने ।
विन बंध प्रतीति भई उर ऐसे, पतिके भुजतें नव नागरि जैसे ॥
प्रकट्यो शिवको मग सहज सुभाए, पथिकी चिदराव हिये हुलसाए ।
चहिहूं कर जोरि जिनेश इहै मैं, वरतो यह ज्योति अखंड हियेमें ॥
तुमरे गुनवारिधमें चित ध्याये, सुमिलै तुममें फिरकें नहि आये ।
फुतरी मिसरी जल थामन ध्यावै, लहि थाह कहो किम आनि कहावै ॥
अनुभो गत है तुमरी गति जानै, तवही गति पंचम है विधि मानै ।
इसही हित तो मुनिनायक ध्यावें, पर आश्रित भाव सभी छिटकावें ॥

सुसुधा निज छाक छके अविकारी, विचरे निरशंक भये भयटारी ।
तुमसो निजकूं निजतें नहिं ध्यावै, तबलौं शिवथानककूं नहि पावै ॥
सुपतीति यहै उर "थान" धरी है, तिहतैं शरना तुमरी पकरी है ।
शरनागत पालक है पन तेरो, चहिये हरनो अब तो दुख मेरो ॥

द्रुमिला छंद ।

तिहके पदध्यान धनंजयमें घन पाप पतंगन जेम जरैं ।
तसु वानि छके गुरुभेषजसी, विधिबंधनाविधि छिनमें निवरैं ॥
मद रावनही रघुवंशधणी नित नेमप्रभू तुव जो सुमरै ।
सु लहै वर दर्शन ज्ञान चरित्र अनुक्रमतें शिवनार वरै ॥ १५ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीनेमिप्रभुजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल छंद ।

नेमप्रभू जसगान उचारत भावसूं ।

पूज करैं मनलाय होय शुचि चावसूं ॥
ताके विकलपवृंद द्वंद्व सब ही टरै ।
ह्वै निर्विकलपदशा शक्ति अपनी धरै ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीनेमिजिनपूजा समाप्ता ॥ १६ ॥

——:०:——

अथ श्रीवीरसेनजिनपूजा ।

स्थापना । छप्पय छंद ।

आदि ओर नहिं जास जोर[1] अद्भुत प्रचंड जसु ।
इंद्र चंद्र नागेंद्र जीति नहिं सकत बोध तसु ॥
सकल जीव जडरूप ठानि ह्वै रह्यो गुमानी ।

1 बल ।

मोह वीर वरशक्ति रंच नहि जात बखानी ॥
जिन वीरसेन वर वीर तुम, धीर धारि तिंह नाश कर।
है कृपावान निज दासपै, तिष्ठ तिष्ठ इत देववर ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थितश्रीवीरसेनजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथ अष्टक ।

त्रिभंगी छंद ।

सुरसरिसमनीरं हरितृटपीरं, प्रासुकसीरं गंधयुतं ।
भरि कर वर झारी धार उतारी, भारी भवरुजतापहतं ॥
यतिवर वरनागर सुजसउजागर, समरससागर बोधवरं ।
विधि अरि हन वीरं जगजनवीरं, जिनवरवीरं पीरहरं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवीरसेनजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलय जु वन आश्रित सुभग सुवासित, त्रासिततपहर अतिसीरा।
शुचि कुंकुमरंगी घसि तिह संगी, अरचत पद हर भवपीरा ॥
यतिवर वरनागर सुजसउजागर, समरससागर बोधवरं।
विधि अरि हन वीरं जगजनवीरं, जिनवरवीरं पीरहरं ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवीरसेनजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल अनियारे सित अतिप्यारे, मनु दुतिधारे सीपसुतं।
शुचि सलिल पखारे पुंज सुधारे, अग्र तिहारे भावयुतं।
यतिवर वरनागर सुजसउजागर, समरससागर बोधवरं।
विधि अरि हन वीरं जगजनवीरं, जिनवरवीरं पीरहरं ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवीरसेनजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुचि सुमन चमेली चंपक रेली, श्यामा बेली पुष्पवरं।
निशिगंध सुरंगं सेवति संगं, हरत अनंगं भेट धरं ॥

यतिवर वरनागर सुजसउजागर, समरससागर बोधवरं ।
विधि अरि हन वीरं जगजनवीरं, जिनवरवीरं पीरहरं ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवीरसेनजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

षट् रस रस भीने अन्न नवीने, नेवज लीने बलकारी ।
मैं मन हरषाऊं क्षुत विनशाऊं, चरन चढाऊं भरि थारी ॥
यतिवर वरनागर सुजसउजागर, समरससागर बोधवरं ।
विधि अरि हन वीरं जगजनवीरं, जिनवरवीरं पीरहरं ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवीरसेनजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक तमहारी ज्योतिप्रजारी, भरि वर थारी भेटधरं ।
तमभ्रमव्रजभंजन विधिअरिगंजन, निजगुन सज्जनसौख्यकरं ॥
यतिवर वरनागर सुजसउजागर, समरससागर बोधवरं ।
विधि अरि हन वीरं जगजनवीरं, जिनवरवीरं पीरहरं ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवीरसेनजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगरादिक पावन गंध सुहावन, ले धूपायनमाहि धरूं ।
तुम पदतर धारूं सुजस उचारूं, कलमष टारूं बंध हरूं ॥
यतिवर वरनागर सुजसउजागर, ममरससागर बोधवरं ।
विधि अरि हन वीरं जगजनवीरं, जिनवरवीरं पीरहरं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवीरसेनजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल पक्क सुपावन नैनलुभावन, शिवफलपावन भेट करूं ।
खारिक मनभावन दाख सुहावन, दाडिम आदिक थालभरूं ॥
यतिवर वरनागर सुजसउजागर, समरससागर बोधवरं ।
विधि अरि हन वीरं जगजनवीरं, जिनवरवीरं पीरहरं ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवीरसेनजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गंध सुहावन अक्षत पावन, घ्रानलुभावन पुष्प लिये ।

चरु दीप रु धूपं फल शुचिरूपं, अर्घ समपूं हर्ष हियं ॥
यतिवर वरनागर सुजसउजागर, समरसनागर बोधवरं ।
विधि अरि हनवीरं जगजनवीरं, जिनवरवीरं पीरहरं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवीरसेनजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

विषमचरित रनभूमिमें, अरि विभावगन जीत ।
वीरसेन निजभाव गढ़, निवसे निपट अभीत ॥ १ ॥
भवभूरुहदाहन-दहन, मनमलभंजन वारि ।
पामर पावन परमपद, तेरो नाम उचारि ॥ २ ॥

अडिल्ल छंद ।

वीरसेन वरवीर सुगुन रनभूमिमें ।

छके महारस वीर सुरस मद घूमिमें ॥
शिवश्यामा अनुराग प्रबल उरमें धरैं ।
ह्वै निशंक ललकार कर्मरिपुतें लरैं ॥ ३ ॥
करन चपलताधारक मनमातंग पैं ।
भये उमागि असवार कर्मरनरंगपैं ॥
समरसभाव सनाह सुरुचिकुल हाकिये ।
साहस शुभकोदंड सरल सायक लिये ॥ ४ ॥
भेदज्ञान वरमित्र संग सुखदैन है ।
सहस अठारा शीलभाव वरसेन है ॥
सेनानी निजबोध बडो बलि बंड है ।
चारित सुभट सधीर अरीगन खंड है ॥ ५ ॥
चक्रव्यूह मिथ्यात्व भेदि अरि सेनमें ।

वैसे धारि उमंग विजय जस लेनमें ॥
सात सुभट तह चूरि चरन आगें धरें ।
चढि सप्तम गुनथान तीन अरिछय करें ॥ ६ ॥
साजि समाधि बल जोरि अनूपम रिस बढे ।
उपशम अवनि विहाय क्षपक श्रेणी चढे ॥
सुभट छतीस प्रचंड नवें थलमें हरे ।
दशमे सूक्षम लोभ नाशि उर रिस भरे ॥ ७ ॥
सुकलध्यान पद दुतिय चंड असि हाथ ले ।
द्वादशमें गुणथान सुभट सोलहदले ॥
सकल घातिया प्रकृति तरेसठि चूरिकैं ।
अद्भुत शोभा सजी बाल शिव पूरिकैं ॥ ८ ॥
गुन अनंत परपूरि असम शोभा घनी ।

परमौदारिक देह परमद्युतितैं सनी ॥
परमभक्ति भरि इंद्र द्रव्य वसु शुभ सजैं ।
परम शर्मकरतार चरन तुमरे यजैं ॥ ९ ॥
रूप सुधारस पान सहस दृगपानतैं ।
करत न रंच अघात अचल पलकानतैं ॥
रसन तालु अस्पर्श अनाहत ध्वनि खिरै ।
भव ग्रीषम तपहरन मेघ-झरसी झरै ॥ १० ॥
जातिविरोधी जीव तजत सब वैर हैं ।
शत योजन चहुं ओर सुभिक्ष तहां रहैं ॥
जंतू वध नहि होय विभव जहँ तुम तनी ।
भई प्रकट इत्यादि दयानिधिता घनी ॥ ११ ॥
करत तिहारो ध्यान सकल दुखगन नशै ।

तुम पद निज उर बसे मनूं हम शिव बसे ॥
तुम सब जाननहार कहा तुमतें कहूं ।
चहूं और कुछ नहीं सुगुन तेरे गहूं ॥ १२ ॥
मेरे औगुन ओर न नेक निहारिये ।
दीनबंधु निज नाम तनी पन पारिये ॥
विनऊं तोहि जगेश जोडि जुग पानकूं ।
भव भव तेरी सेव देव ! दे "थान" कूं ॥ १३ ॥

सवैया इकतीसा ।

भूमिपालभूपकुलकंजविकसानभान, भंजनबलीश बालिबंड मोहसैनाके
भानाचिन्ह केतु भवसिंधु लंघवेकूं सेतु, दरप विहंड महामैन दुखदैनाके
सुभगपुरंदरकेपुरुसोपुर पुंडर है, रुच्यो गयो कारन तिहारे जन्मलैनाके
तप रनवीर धीरधारी देव वीरसेन, दायक अनंद जयो नंद वीरसेनाके ।

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीवीरसेनजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

अडिल्लछंद।

बीरसेन जिन वीर धीर भर जो यजै।
वीररूप निज धारि सु कायरता तजै॥
ते वसुमी भुवि लसै शत्रु वसु जीतिसैं।
विलसै सुख निज धाम मुक्तिकी प्रीतिसैं॥ १॥

इत्याशीर्वादः।

इति श्रीवीरसेनजिनपूजा समाप्ता॥ १७॥

अथ श्रीमहाभद्रजिनपूजा।

मंडल छन्द।

देवराज नृपके वर नंदन, उमासूनु सुखदाय।
विजया नगर परम पावन तहं, लियो जनम शुभ आय॥

चन्द्र चिन्ह ध्वजधरन देववर, महाभद्र जिनराय ।

थापूं तोहि यजन हित हे जिन, तिष्ठ तिष्ठ इत आय ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्री महाभद्रपरमदेव ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रपरमदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रपरमदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

शरन हम महाभद्र तोरी, करमअद्रिहरकुलिश कृपापर कर सहाय मोरी ॥ टेक ।

सलिल मिष्ट शीतल मन भावन जुत सुगंध डोरी ।

मोचन मलविधिबंध धार त्रय धरूं चरन ओरी ॥

शरन हम महाभद्र तोरी, करम अद्रिहरकुलिश कृपापर कर० ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंदन बावनके संग पावन, कुंकुम घासि जोरी ।

तुम पद युग अरचत शिवनायक, परमत शिवगोरी ।
शरन हम महाभद्र तोरी, करमअद्रिहरकुलिश कृपापर० ॥८॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अक्षत औघ अखंड अनीयुत, हँसत चंद्र ओरी ।
करत पुंज तव चरनकंज तर, पावत शिवगोरी ॥
शरन हम महाभद्र तोरी, करमअद्रिहरकुलिश कृपापर० ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुमन सुहावन घ्राणलुभावन पावन मन डोरी ।
पावन-तुव पावनतर धारत मैन मनी मोरी ॥
शरन हम महाभद्र तोरी, करमअद्रिहरकुलिश कृपापर० ॥४॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नेवज नवल सुहाने घेवर फीनी रसबोरी ।

श्रीपति चरन चढात तिहारे, नाशै क्षुत दौरी ॥
शरन हम महाभद्र तोरी, करमआद्रिहरकुलिश कृपापर० ॥५॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥
वाति कपूर पूर दुति सुंदर, तुम सनमुख जोरी ।
ज्ञानभान परकाशि नाशि तम, भई बुद्धि गोरी ॥
शरन हम महाभद्र तोरी, करमआद्रिहरकुलिश कृपापर० ॥६॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥
पूरनगंध धूप अगरादिक, पावकसंग जोरी ।
तुम पद धरत बंधविधिकारन, जरै करम डोरी ॥
शरन हम महाभद्र तोरी, करमआद्रिहरकुलिश कृपापर० ॥७॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेंद्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥
फल रसपूर मधुर अवलोकत, ललचत दृग जोरी ।

तुम पद धरत चखत शिवफल वर, बँधै सुरस डोरी ॥
शरन हम महाभद्र तोरी, करमअद्रिहरकुलिश कृपा० ॥ ८ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत मदनायुध, चरु अमृत कोरी ।
दीप धूप फल अरघ भेट तुव, करिकैं कर जोरी ॥
शरन हम महाभद्र तोरी, करमअद्रिहरकुलिश कृपा० ॥ ९ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

परिवर्त्तन अहि अशनकर, वैनतेय तसु वैन ।
महाभद्र जिन जयति जग, नमूं नमूं सुखदैन ॥ १ ॥

मोतीदाम छंद ।

जयो तुम भद्र गुनातमरूप, रची चिदचिंतन केलि अनूप ।
विराग कहैं तुमकूं कवि केम, रच्यो शिवभामानितैं अतिप्रेम ॥ २ ॥
तजे किम भोग अहो जिनदेव, लिए तुम भोग अनंत अछेव ।
तज्यो किम लोभ अहो जिनराय, लही निधिज्ञान अनंत लुभाय ॥
तज्यो किम संग अहो जगपाल, धरो समवसृति भूति विशाल ।
तज्यो किम बांधववर्ग सुदेव, किये जगजंतुन बंधु स्वमेव ॥ ४ ॥
तज्यो किम मोह अहो जगपार, कियो सब ज्ञेयविषै विसतार ।
तजी चलवृत्ति कहो किंह भाय, रमो तुम लोकअलोकन जाय ॥५॥
तज्यो किम राज कहो जिनदेव, करैं जगराज सबैं तुम सेव ।
तज्यो किम द्वेष कहो जगपाल, वसू विधिबंधनके तुम काल ॥ ६ ॥
सही हम जान लई मनमाहि, घटी तुमरी कछु हू नहि चाहि ।
तजे सब कारज जानि असार, गहे जितने जु लखे हितकार ॥ ७ ॥

भली तुमरी महिमा दुखनास, दियो अधर्मीजनकूं दिववास ।
तुहै मुखसो शशि चाहत कीन, बनात मनूं विधि तोरि नवीन ॥८॥
करै तिहँ षोडश भाग सु जोरि, बनैं फिर ना तब डारत तोरि ।
घटा बधि या हित होत सदीव, लख्यो थिर नाहिं परें निशि पीव ॥९॥
लजे चरनाधर पाणि निहारि, कढै नहि कंज रहै गहि वारि ।
ध्वनी सुनि लज्जि भयो घनश्याम, प्रभालखि मेरु गह्यो इक ठाम ॥
लखें तव तेज चितें दुचिताय, मनूं यह भान भमें नभ मांय ।
कहै उपमा तुमको कवि कोय, लसै तुमरी तुम ही मधि सोय ॥ ११ ॥
प्रभू हम दीन त्रपापट टारि, करी थुति ये अपनो हितधारि ।
क्षमों हमरे सब औगुन देव, कृपाकरि देहु सदा तुमसेव ॥ १२ ॥
गही शरना तुमरी अब देव, भये सब कारज सिद्ध स्वमेव ।
चहै यह "थान" दुहूं कर जोरि, अनातमभाव हुवै न बहोरि ॥१३॥

मालिनी छंद।

इति जिनगुनमाला, पर्म आनंदशाला।
सकलविघनटाला, शुद्धरूपा विशाला॥
करि तन मन शुद्धी, जो स्वरों धारि गावें।
विलसि सुख दिवाले, मुक्तिश्री सो लहावें॥ १॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीमहाभद्रजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अडिल्ल छंद।

महाभद्र गुनभद्र भद्र मनतें भनें।
कर्म अद्रि चकचूरि अचल सुख सो सनें॥
विलसै सुख सुरबालकमालिनी बागमें।
रमें बहुरि चिरकाल वधूशिव लागमें॥ १॥

इत्याशीर्वादः।

इति श्रीमहाभद्रजिनेश्वरपूजा समाप्ता॥ १८॥

अथ श्रीदेवयशजिनपूजा ।

खरगा छंद ।

देवयशगान तो करत मुदठानिकैं, धरतमुनिध्यानतें मोक्षपावै खरो ।
प्रानधारीनको प्रानरक्षक तुही, ज्ञानधारीनमें ज्ञानधारी वरो ॥
भूरि आनंदके कंद सुखवृंद दे, चूरिये दुंददल महर मोपै करो ।
देव देवेश जू थापिहूं तोहि मैं, तिष्ठ तिष्ठो इतै कष्ट मेरो हरो ॥१॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट् ।

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट् ।

अथ अष्टक ।

राग पीलू ।

तेरी भक्ति बसी मन माहीं, मैं तो पूजूं पद हरषाईं ॥ टेर ॥

धुनी सुरसरी समजल प्रासुक, ले भृंगार भराई ।
करन नाश परत्राह तृषा त्रय, धारूं धार धराई ॥
तेरी भक्ति वसी मनमाही, मैं तो पूजूं पद हरषाई ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

शुचि कुंकुम चंदन मलयागिर, घनरस संग घसाई ।
ताप महाआकुल कुल वारन, तुमरे चरन चढाई ॥
तेरी भक्ति वसी मनमाही, मैं तो पूजूं पद हरषाई ॥ २ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

सित हिमाभ तंदुल अनियारे, धारि रकेबी माही
वसु गुनयुत वसुमी क्षिति पावन, पुंज करूं तुम माही ॥
तेरी भक्ति वसी मनमाही, मैं तो पूजूं पद हरषाई ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पूरित गंध सुमन गन ऊपर, अलि अवला मँडराईं ।
करन सुमन पावन हित हे जिन ! भेट धरूं मैं लाईं ॥
तेरी भक्ति बसी मनमाही, मैं तो पूजूं पद हरषाईं ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नेवज मधुर नवल बलकारन, लोयन लेत लुभाईं ।
करन पुष्ट निजरूप ज्ञानबल, भेट धरूं उमगाईं ॥
तेरी भक्ति बसी मन माही, मैं तो पूजूं पद हरषाईं ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीप कपूर पूरि घृत शुचिकैं, सुंदर जोति जगाईं ।
आराति हरन आरती तेरी, करिहूं मन मुददाईं ॥
तेरी भक्ति बसी मनमाही, मैं तो पूजूं पद हरषाईं ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर तगर कदलीसुत आदिक, चूरि सुधूप बनाई।
श्रीपतिचरनकंज तुमरे ढिग, खेऊं विधिछयदाई ॥
तेरी भक्ति वसी मनमाही, मैं तो पूजूं पद हरषाई ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

दाडिम दाख आम नारंगी, ले फलराशि सुहाई।
शिवफल हेत भेट तुमरे पद, ढिग धारूं उमगाई ॥
तेरी भक्ति वसी मनमाही, मैं तो पूजूं पद हरषाई ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत पुष्पावलि, नेवज ले बलदाई।
दीप धूप फल वसुविध सुंदर, अर्घ धरूं तुमपांही ॥
तेरी भक्ति वसी मनमाही, मैं तो पूजूं पद हरषाई ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

विधिघन विन चिद्‌राविछटा, दमकि रही दुति ऐन ।
छकित होत छवि निरखिकै, सुर नर मुनि मन नैन ॥ १ ॥

दोधक छंद ।

तारक हो तुम ही जगस्वामी, बारक भो दुख अंतरजामी ।
मौन विकाश दिनेश तुही है, शुभ्र गिरा धरईश तुही है ॥२॥
तू विधि है चतुराननधारी, मर्दन तू मुर मोह मुरारी ।
और कषायविषैं बासि सारे, हो तुम द्वेष दोष दुख टारे ॥ ३ ॥
यद्यपि मोह तज्यो तुम स्वामी, ना करता हरता शिवधामी ।
तद्यपि ध्यान धरें जिन तेरो, सिद्ध फुरै मनवंछित मेरो ॥ ४ ॥
यह उरमें दृढता हम धारी, तब पद सेव गही त्रिपुरारी ।
यह भव कानन भीम गुसाईं ,शैल विभाव तहां दुखदाई ॥ ५ ॥

श्रेय सबै करता तुम त्योंही, ना कछु संशय है विधि योंही ।
आस्रव नीर झरैं झरने हैं, भूरुह बंधसमूह घने हैं ॥ ६ ॥
मोह महा मृगराज गलारै, धीर्य तहां जगजंतु निवारै ।
भील मनोज तहां दुखदानी, लूटनकूं शुभ सौंज सुहानी ॥७॥
प्रीति जहां जुरि झांसि रही है, द्वेष महाभयदैन अही है ।
है तृष्णा जल माल डरानी, न्हेल निगोद धरै दुखदानी ॥८॥
वारण मत्त जु मान जहां है, आरण महिष जु क्रोध तहां है ।
मत्सर रीछ जहां घुरांवै, लोभ दरार अथाह दिखावै ॥ ९ ॥
कर्म उदै फल द्वैविध तामें, है हितकारक एक न जामें ।
आराति भाव जुरे वनचारी, पावक वेद कषाय करारी ॥ १० ॥
अक्षविलास पलास विकासै, आकुलभाव पिशाच जु भासै ।
छांह घनी घन है भ्रम जामें, सूझत ज्ञान दिनेश न तामें ॥११॥

भाव असत्य ढिगां भरमायो, मैं चिरतैं शिवपंथ न पायो ।
लब्धिबसाय गुरूमुख गाई, दीपशिखा तुमरी ध्वनि पाई ।।१२।
चाहत हूं शिवराह गही मैं, जाचत हूं कछु और नहीं मैं ।
पंथसहायक ध्यान तिहारो, संबल दे निजबोध हमारो ॥ १३ ॥
बाहन शुद्ध क्रिया कर दीजे, संग सधर्मिनको नित कीजे ।
तो चरचा मगमें नित होवै, भक्ति सराय जहां हम सोवैं ।।१४।
उद्यम है अथवा मगमाही, राह मिलै शुचि सम्यक याही ।
"थान" लहूं जब लों शिवनीको, ये सब होहु सहाय धनीको ॥

दोहा ।

जयो नृपति स्तवभूत सुत, गंगा उर अवतार ।
स्वस्तिक ध्वज जसु जनमथल, नगर सुसीमा सार ॥ १५ ॥

मेघविस्फूर्जित छंद ।

तजै शंका कांक्षा निजहितरता भाव संवेग धारैं ।

सजैं आनंदौघ पुलकिनवपू शुद्धस्तुती उचारैं ॥
लहै सो संवोधं सकलसुखदं कीर्ति भूलोक छावै ।
हुवै शक्री चक्री अचल अमलं मुक्तिभूमी लहावै ॥१७॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीदेवयशजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

अडिल्ल छंद ।

जयो देवयश देव देवपति पूजकी ।
भक्ति महासुख दैन कला शशि दूजकी ॥
करै सिन्धु सुख वृद्धि सिद्ध सव दायनी ।
घायक सकल कलेश कलंक पलायनी ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीदेवयशजिनपूजा समाप्ता ॥ १६॥

अथ श्रीअजितवीर्यपूजा।

कवित्त छंद।

भास घन चेतनको विशद विकास जास,
त्रासन अरीकी जाहि वीरज अमानतें।
आसन्न कीन्हो है अचलासन अनूपहीकूं,
विजय अनंग कियो अंग अमलानतें ॥
वीर मोह आदि जगजीततें अजीत लसें,
रंच न अघात शिवश्यामा सुखदानतें।
वीर्य अजितेश एम मगन सुखोदाधिमें,
अंत करि अंतको चिरंजीभात्र प्रानतें ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट्।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अथ अष्टक ।

राग बरवा ।

हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी, तो गुन में झलकंत सही ॥ टेर ॥

सलिल स्वच्छ प्रासुक तृट भंजन, भरि भृंगार लहूंजी ।

पावन पतित पांव तव पूजूं, भवभ्रमनाश चहूंजी ॥

हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी, तो गुन में झलकंत सही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

हरि बावन कदलीसुत कुंकुम, जलसंग मोलि घसूंजी ।

श्रीपतिचरन चढावत तेरे, आकुलताप कसूंजी ॥

हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी, तो गुन में झलकंत सही ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अक्षत श्वेत अमल अनियारे, करि शुचि थाल भरूंजी।
क्षिति दशमी पावन मनभावन, तव पद पुंज करूंजी ॥
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी, तो गुन
में झलकंत सही ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुमन सेवती रैण सुगंधादिक, बहु भेट धरूंजी।
उद्दीपन शिवातियको करिकैं, विजय मनोज करूंजी ॥
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी, तो गुन
में झलकंत सही ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

फैनी सुखदैनी क्षुतखैनी, चरु बहु भांति धरूंजी।

भरि वर थार वारि तव पदमैं, क्षुत परचाहि हरूंजी ॥
हो ज्ञानी तैंनें जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी० ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥
प्रज्वलित ललित गलततमभर वर, दीप उदोत करूंजी ।
भारतीश ! तुव करत आरती, आरति सकल हरूंजी ॥
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी० ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥
कृष्णागर कर्पूर शिलारस, मलयज चूर करूंजी ।
दशविध बंधक फंद प्रजारन, दाहकसंग धरूंजी ॥
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी० ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥
शुभ सहकार अनार नरंगी, निंबुक थार भरूंजी ।
शिव उरोज श्रीफल फलपावन, ये फल भेट धरूंजी ॥

हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गंधाक्षत सुमन चरूवर, दीप उदोत करूंजी ।
धूप दशांग पूररस फल वर, वसुविध अर्घ धरूंजी ॥
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूं कहाजी ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्रीअजितवीर्यजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा—अजितवीर्य जिनदेव तुव, पदनीरज नमि भाल ।
धरि धीरज जय जस सुखद, भनूं विशद जयमाल ॥ १ ॥

पद्धडी छंद ।

जय अजितवीर्य वीरज अपार, तुमकूं मम प्रणमन बार बार ।
सुख आशा धरि चिरतें जिनेश, भवमें हम भ्रम ठाने अशेष ॥ २ ॥
सुखजाति निराकुलता न जानि, जडसंग किई निजशक्ति हानि ।

गुरुके मुखतें अब भेद पाय, निजमें तुम रूप रह्यो सु छाय ॥ ३ ॥
तुम समवसरन रचना बखान, नाहिं बरन सकें धरि च्यार ज्ञान ।
निज नर भव पावन करन हेत, मैं बरनूं कछु आनँद उपेत ॥ ४ ॥
धनु पांच सहस भुवितें उतंग, सोपान सहस विंशति अभंग ।
लंबे इक कोशतने सुजानि, इक कर उन्नत आयाम मानि ॥ ५ ॥
योजन तसु द्वादस व्यास रूप, मणि-नील-शिला ऊपरि अनूप ।
तहँ प्रथम शाल वर धूलिशाल, पणरत्नरचित युत छवि विशाल ॥६॥
तिहके चवद्वारानितें सुजान, चौरी इक कोश गली महान ।
मणि फटिक भीति चहुं दिश अनूप, इह गंधकुटी तक रुचिर रूप ।७।
तिन मध्य प्रथम चहुं दिशमझार, चव वापी संयुत छवि अपार ।
जिन बिंब धरे शुचि मानथंभ, मानी-मन-मद-मर्दन उतंग ॥ ८ ॥
चहुं ओर अवनि धुर वलयरूप, प्रासादपाँक्ति तिहमें अनूप ।
फुनि वेदी तज कीने प्रवेश, भुव दुतिय मध्य खाई शुभेश ॥ ९ ॥

मणिमयतट विकसित कंजव्रात, सोपान रतनमय मन लुभात ।
शुकसारिक मोर मराल वृंद द्विज केलि करैं नाना अमंद ॥ १० ॥
इम धूलीशालथकी सु जानि, खाई तक योजन एक मानि ।
फुनि बेदी तजि भुव तृतीय सार, सुवलय इक योजन मान धार ।११।
पुष्पानिकी बाड़ी है अनूप, मंडप जु अतान वितानरूप ।
थल सुंदर शिलतल है अपार, तित देव रमैं आनंद धार ॥ १२ ॥
फुनि स्वर्ण साल सोहै अपार, छविमंडित मणिमय द्वार च्यार ।
तोरन वंदनमाला विशाल, बँगलें मुकताफल माल भाल ॥ १३ ॥
कँगुरे कटनी सीढी सुभेष, कंचन मणिमय राजै अशेष ।
शुक कोक मयूरादिक स्वरूप, मणि चित्र विविध झलकै अनूप ।१४।
सुर यक्ष तहां दरवान सार, नवनिधि द्वारै ठाडी अपार ।
आगैं दुहु औरनकूं महान, गलिएं विचरनकूं शोभमान ॥ १५ ॥
तिनमें द्वय द्वय अतिरुचिररूप, घटधूप नृत्यशाला अनूप ।

तहं द्रम द्रम द्रम बाजत मृदंग, सुरबाल नचैं वर ताल संग ॥ १६ ॥
सननन सारंगी सननननात, पग नूपुर झुननन झुननननात ।
ताथेई ताथेई ताथेई चलंत, फिर फिर फिर फिर फिरकी लहंत । १७ ।
लचकत कटि कर ग्रीवा सु सार, दरसात नवूं रस छवि अपार ।
तननं तननं तननं सुवीन, गतिपूर बजें स्वर सप्त पीन ॥ १८ ॥
लय ग्राम गमक मूर्छा सुधार, उचरंत तरल तानें अपार ।
इत्यादिक साजि श्यामाअनूप, जगपति जस वरनत भक्तिरूप । १९ ।
वन च्यार चहूं कोनै मझार, युत वेदी गिरि सर सरित सार ।
वापी वंगले रजरत्नरूप, क्रीडैं सुर नर खग तहँ अनूप ॥ २० ॥
चंपक छदसप्त अशोक आम, तरु चैत्य चैत्ययुक्ताभिराम ।
इक योजन चोथी भुमि येम, अब वरनत हैं आगें सु जेम ॥ २१ ॥
वेदी तजि ध्वजपंकति विशाल, इक योजन पंचम भू रसाल ।
फुनि रजतकोट पूरव समान, राजैं अनुपम रचनानिधान ॥ २२ ॥

दरवान जहां सुरनाग जान, सन्मुख अदभुत राजें महान ।
फुनि षष्टमि भुवि योजन मझार, वन कल्पवृक्ष शोहै अपार ॥ २३ ॥
तरु सिद्ध चहूं दिश हैं शुभेश, युत सिद्ध बिंब राजें नगेश ।
मंदार नमेरुक पारिजात, संतानकयुत इम च्यार भांत ॥ २४ ॥
वेदी ताजि फुनि योजन सु आध, भुवि सप्तमि राजत हरि विषाद ।
चहुं दिशमें नव नव तूप श्रृंग, जिनप्रतिमायुत छविके प्रसंग ॥ २५ ॥
फुनि फटिक कोट शोभा अमान, सबतें अदभुत राजें महान ।
गोपुर पन्नासम लसत जास, सुर कल्प सुभग दरवान जास ॥२६॥
गलियनकी वेदी युत महान, वेदी तक षोडश भींत जान ।
तिनपें खंभन पर फटिक रूप, श्रीमंडप राजत है अनूप ॥ २७ ॥
मुक्ताफलमाला रत्नघंट, घटधूप आदि रचना महंत ।
सब थलतें अष्टम भू मझार, रचना अदभुत आनन्दकार ॥ २८ ॥
तिनमें चहुं ओर गली जु टार, दश दोय सभा शोभै सुसार ।

मुनि कल्पसुरीआजियाँ सुजानि, तिय ज्योतिषैं व्यंतरें भुवँन मानि ॥
व्यंतर भावँन ज्योतिषैं जु देव, कल्पामर नँर पँशु येम भेव ।
फुनि भींतर वेदी मध्य जानि, है प्रथम पीठ पन्ना समान ॥ ३० ॥
वसु धनुष तुंग द्वयकोश व्यास, वसु पङ्ल द्विगुन छवि गोल जास ।
ता परि च्यारों दिश यक्ष देव, वृषचक्र धरें शिरपैं स्वमेव ॥ ३१ ॥
जिनभक्त तनो तिहं तक्र प्रवेश, फुनि दुतिय पीठ कलधौत भेश ।
चव धनुष तुंग ध्वजयुत स्वरूप, तहं मंगल द्रव्य धरे अनूप ॥ ३२ ॥
फुनि तृतिय पीठ नग जटित सार, चव धनुष तुंग रचना अपार ।
तिह ऊपर गंधकुटी रसाल, छविपूरति गंध धरें विशाल ॥ ३३ ॥
सुरतरुके पुष्पनिकी अनूप, लूंबत है माल रसालरूप ।
युत पत्र पुष्प किसलय अपार, छवियुत अशोक तरु शोकहार ।३४।
पदतर चव सिंहनके सु रूप, गह विष्टरसिंह लसै अनूप ।

सब रतनजटित सोहै अपार, सुरधनुसम प्रसरित जोति जार ॥३५॥
तिहँपैं चतुरंगल व्योम टार, पद्मासन जिन छवि निर अधार ।
अनुपम भामंडलको उदोत, लखि कोटिक रवि छवि छीन होत ॥३६॥
भविजनकूं भव दरसात सात, महिमा तिनकी बरनी न जात ।
घनसम धुनि सब भाषा जतात, भ्रम वेग अंस कहूं ना रहात ॥ ३७ ॥
शिर छत्र तीन शशिकूं लजात, प्रभुता तिहुं लोकनकी जितात ।
सित चामर गंग तरंग जेम, चवसठि गित सुर ढारें सप्रेम ॥ ३८ ॥
तुव धुनिबल मनु हरि मदनबान, तुम ढिग डारत सुर मुद महान।
सो पुष्पवृष्टि बरनी न जात, शसकेतुपराजयकूं जितात ॥ ३९ ॥
जगजीवनकूं धुनि पूरि इष्ट, सुरताडित दुंदुभिनाद मिष्ट ।
रिपु मोह जयो ह्वैके निरोष, मनु तास विजय भाषे सुघोष ॥ ४० ॥
क्रीडा चिद्‌चिंतन अतुल जास, कवि कौन कहै बुधिबलविकास ।

पट द्रव्य अमित शक्ती न अंत, तिहुं कालमयी सत्ता अनंत ॥४१॥
पर्याय अनंत लिये जु ताहि, झलकै गुनभाग अनंत मांहि ।
अनुभव करिकै वरने जु केम, मिसरी चाखि मूक भनें न जेम ॥४२॥
जिय जातिविरोधी वैर छांडि, उर प्रीति धरें आनंद मांडि ।
तहं रोग शोक व्यापे न भूर, दुख सकल नशें आए हजूर ॥ ४३ ॥
दुख द्वेष दोषवर्जित विराग, तव राग भए नाशें कुराग ।
इम अतिशय असम धरें अपार, मंडित निर आकुल सौख्यसार ॥
यह छवि चितवन उपवन मझार, मेरो मन रमन चहै अपार ।
अरजी अब ये सुनिये कृपाल, दुरभाव अविद्या टाल टाल ॥ ४५॥
समरस सुख निज उर मंडि मांडि, पर चाह दाह दुख खांडि खंडि ।
प्रकटो उर परउपकारवानि, निशादिन उचरूं तुम सुगुन गान ॥४६॥
तुम वैन सुधारसपान सार, चाहूं भव भव आनंदकार ।

तुम भक्त संतजनको सुसंग, मति होहु कुमतिधरको प्रसंग ॥ ४७ ॥
परनिंदा परपीडन कुबानि, मति होहु कभी निज सुगुनहानि ।
सदगुरुचरणांबुजसेव सार, दीजे जगपति भव भव मझार ॥ ४८ ॥
तुव दरश करूं परतक्ष देव, यह चाहि हिये वरतै सुमेव ।
पावें जब लों नहि मोक्षथान, तबलों यह देहु दयानिधान ॥ ४९ ॥
हम जाचत हैं कर जोरि जोरि, अघबंधन मेरे तोरि तोरि ।
निजबोधसुधासुखको भंडार, अब "थान" हिये प्रकटो अपार ॥५०॥

कनकनि नंद आनंदकर, करो विघ्नगन नाश ।
पद्मचिह्नध्वज जनम थल, नगरि अयोध्या जास ॥ ५१ ॥

सुन्दरी छंद ।

निज स्वरूप हिये दरसावनी, सकल पातिगताप नसावनी ।
अजितकी जयदा जयमालही, धरत कंठ लहें शिवबालही ॥ ५२ ॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थश्री अजितवीर्यजिनेंद्राय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल छंद ।

सीमंधर युगमंधर वाहु सुवाहुजी, संजातक अरु स्वयंप्रभूसुखदाय जी
ऋषभानन अरु अनंतवीर्य मनमोहने, सूरप्रभू रु विशालप्रभू अति सोहने
अवर वज्रधर चंद्रानन अति चारु हैं, चंद्रबाहु रु भुजंगम ईश्वर सार हैं
नेमप्रभू अरु वीरसेन वरनाम ये, महाभद्र अरु देवयशहि अभिराम ये
अजितवीर्य इम विंश परम जिनदेव हैं ।
हरैं तिमिर मिथ्यात्व करैं सब सेव हैं ॥
इन्हैं भक्ति धरि भव्य यजैं मन ल्यायकैं ।
ते नर सुर सुख भोगि वरैं शिव जायकैं ॥ २ ॥

ग्रंथ कर्त्ता परिचय-कवित्त ।

इब्राहीम अलीखां नवाबको सुराज तहां,
काका तिनको जु अबदुल्लाखां विख्यात है ।
ताकी सहायतें जु कारपरदाज तास,

धरम अनुराग धरैं रहे कुशलात हैं ॥
सार शुचि स्तुति ये रची है पुर टोंक थान,
कुल अजमेरा फौजसिंह जाम तात हैं ।
विधिमुखं लोकं निधि इंदु साल विक्रममें,
वार शशि अश्वनि नौमी अवदात है ॥ १ ॥

दोहा ।

गृहपति दूनिपाति हि के, संघी पन्नालाल ।
वृषवत्सल तिन पाठ यह, कीनो सोधि रसाल ॥ २ ॥
सकल करन पर्याय निज, अरु परको हित जान ।
विना बुद्धि थुति करनपैं, मति हासियो मतिमान ॥ ३ ॥
ये विनती कर जोरिकैं, लीज्यो चूक सुधार ।
करियो भक्ति जिनेशकी, भरियो पुण्य भंडार ॥ ४ ॥

इति विदेहक्षेत्रस्थविंशतिविद्यमानतीर्थंकरपूजा समाप्ता ॥ २१ ॥